मान मंदिर बरसाना

मासिक पत्रिका-वर्ष ०९ ,अंक ०९, श्रीकृष्ण सं.५२५१ 'भाद्रपद-आश्विन' वि.सं. २०८२, सितम्बर २०२५ ई.)

मूल्य १०/-

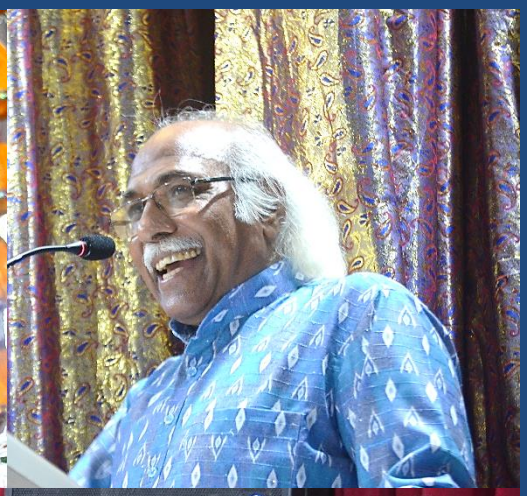

जन्माष्टमी के पावन पर्व पर 'श्रीजी संगीत विद्यालय' की छात्राओं द्वारा संगीत प्रस्तुति (रसमण्डप, बरसाना)

अनुक्रमणिका

विषय- सूची		पृष्ठ- संख्या
१	श्रीरसावतार 'राधाजन्म'	.०५
२	श्रीधाम बरसाना में गोसेवार्थ श्रीरामकथा महामहोत्सव	....०६
३	समाज सेवी श्री हरेश भाई के साक्षात्कार के अंश	.....०८
४	'गौपालन' से सर्वसमृद्धि	.....१०
५	श्रीरक्षाबन्धन-रसोत्सव	.....११
६	श्रीभारतवर्ष का ७९ वाँ स्वतंत्रता दिवस	.....१३
७	श्रीब्रजरससिंधि 'कृष्णावतार'	.....१५
८	ब्रज-संरक्षणार्थ 'श्रीबल्देव-प्राकट्य'	.....१७
९	श्रीराधावतरणलीला का संक्षिप्त इतिहास	.....१८
१०	बाबाश्री की ब्रज-गाथा	.....२३
११	श्री राधारानी वार्षिक ब्रजयात्रा २०२५ (सूची)	.....३३

।। राधे किशोरी दया करो ।।

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषय-विष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो ।

INSTAAL करें --- PLAY STORE से-----

MAANINI APP

बाबाश्री के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं ।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८.०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं ।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले ।"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें । हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है ।

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें । हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।** (श्रीमद्भागवत३/७/४१) अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता ।

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल** , प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर , गह्वरवन, बरसाना, मथुरा** (उ.प्र.)
mob. **राधाकांत शास्त्री** .....9927338666, Website :www.maanmandir.org ,
(E-mail :info@maanmandir.org)

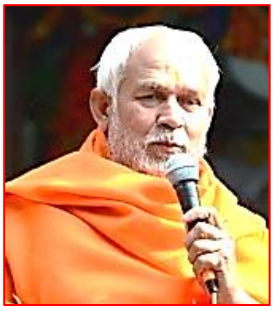

प्रकाशकीय

'ब्रजभूमि' का उत्कर्ष बताते हुए कहा गया कि यह जो बरसाना (श्रीगह्वरवन) धाम है – **'अत्रैव ब्रजभूमिः सा'** यह ब्रजभूमि वह धाम है, जहाँ 'नित्य लीला एवं प्रकट लीला' दोनों ही लीलायें चलती हैं । प्रकट लीला चलती है, यह बात तो देखने में आ जाती है, जैसे - द्वापरयुग में श्रीजी ने अवतार लिया और लीला की परन्तु अब तो वे हमें दिखायी ही नहीं पड़ रही हैं । नित्य लीला का तो मतलब है कि हमेशा लीला चलती रहे परन्तु हमें तो श्रीजी यहाँ दिखायी ही नहीं दे रही हैं, फिर हम कैसे मान लें कि इस ब्रजभूमि में नित्य लीला चल रही है । स्कन्दपुराण में इसका उत्तर दिया गया है कि यहाँ नित्य लीला तो सदा चल ही रही है किन्तु जो इसके अधिकारी भक्तजन हैं, उन्हीं को इसका दर्शन होता है । अब हमें इसका दर्शन नहीं हो रहा है तो इसका मतलब यह नहीं है कि यहाँ लीला हो ही नहीं रही है । लीला तो हो रही है किन्तु हमें इसका दर्शन नहीं हो रहा है, यह बात अलग है लेकिन यहाँ प्रकट लीला भी होती है एवं नित्य लीला भी होती है । दोनों ही लीलायें श्रीराधारानी के इस पावन बरसाना धाम (ब्रजभूमि) में होती हैं ।

श्रीकृष्ण की जो त्रैसर्गिक लीला कही गयी है – 'ब्रजलीला, मथुरालीला और द्वारकालीला' उसमें जो ब्रजलीला है, उसको नित्यलीला माना गया है तथा मथुरा, द्वारका की जो लीला है, उसको प्रकट लीला माना गया है । मथुरा और द्वारका में तो श्रीकृष्ण कभी आयेंगे और कभी चले जायेंगे परन्तु ब्रज से तो न कभी वे गये और न ऐसा है कि किसी निश्चित समय पर वे यहाँ आयेंगे; यहाँ तो वे सदा से हैं और सदा ही रहेंगे । इसीलिए ब्रजलीला को नित्यलीला माना गया है और मथुरा-द्वारका की लीला को प्रकटलीला माना गया है । वैसे ही श्रीजी की जो त्रैसर्गिक लीला है – 'रावल, बरसाना और वृन्दावन की लीला' इसमें बरसाने की लीला को यहाँ के रसिकों ने नित्यलीला माना है एवं रावल तथा वृन्दावन की लीला को प्रकटलीला माना है । प्रकटलीला में आना-जाना होता है किन्तु नित्य लीला में आना-जाना नहीं होता है । अतः बरसाने में तो श्रीराधारानी नित्य विहार करती हैं परन्तु यह नित्यलीला उसी को दिखायी पड़ती है जैसा कि रसिकों ने गाया है – **'यह रस बरसे बरसाने जू । बिनु कुँवरि कृपा को पावे जू ॥'** जिस पर कृपा (अनुग्रह) की वर्षा हो जाए, उसका साक्षात् नित्यलीला में प्रवेश हो जाता है । यह नित्यलीला भूमि है, यहाँ नित्य ही राधारानी की लीला होती रहती है और अधिकारीगणों को उसका दर्शन भी प्राप्त हो जाता है । जिन पर श्रीजी की कृपा होती है, उन्हीं को यहाँ नित्यलीला का दर्शन होता है । ब्रजरसिकों ने कहा है – **'गह्वर श्रीराधा को घर है । ताकी देहु सोहिनी स्वामिनी, यही चाह मो उर अंतर है ॥'** 'गह्वरवन' राधारानी का नित्य घर (उनका अपना घर) है । अब वे जिसे चाहें अपने घर में बुलायें, जिसे चाहें उसे अपनी अनुभूति करायें । बिना उनकी इच्छा के, बिना उनकी कृपाशक्ति के अनुभव में राधारानी नहीं आयेंगी । बरसाना नित्य लीलास्थल है, इसका प्रमाण भी परम रसिक संत श्रीव्यासजीमहाराज की वाणी में दिया गया है, उन्होंने अपने एक पद में कहा – **'लागी रट राधा-राधा नाम । ढूँढ फिरी वृन्दावन सगरो, नन्द डिठौना श्याम ॥ कै मोहन कै खोर साँकरी, कै मोहन नंदगाँव । 'व्यासदास' की जीवन राधे, धनि बरसानो गाँव ॥'**

स्वयं रसिकों की वाणी से ही यह प्रमाणित है कि बरसाना नित्य लीलाभूमि है । आज भी यहाँ नित्य लीला हो रही है । अधिकारीजनों (श्रीकृपापात्रों) को इसका अनुभव भी होता है, उनको दर्शन भी होता है । राधारानी सदा ही बरसाने में विराजती हैं और भक्तों की अभिलाषा को पूर्ण करती हैं, ऐसी वे परम करुणामयी हैं ।

कार्यकारी अध्यक्ष
राधाकान्त शास्त्री
श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

श्रीरसावतार 'राधाजन्म'

भावाभिव्यक्ति –

अध्यक्ष – डॉ. श्रीरामजीलालजी शास्त्री,

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

रसिक महापुरुषों ने कहा कि बिना राधारानी का वर्णन किये भागवत का रसरूप सिद्ध नहीं होगा, रस नहीं आयेगा क्योंकि आह्लादिनी शक्ति, रस शक्ति, रस प्रदान करने वाली शक्ति तो 'श्रीराधारानी' ही हैं। 'जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्' इस श्लोक में आद्यस्य शब्द पुल्लिंग है। 'आद्यस्य' शब्द पुल्लिंग का शब्द है तो यहाँ राधा नाम कैसे सिद्ध हो जायेगा, राधा नाम की सिद्धि के लिए तो यहाँ स्त्री लिंग के शब्द का प्रयोग होना चाहिए। इसका उत्तर यह है कि कई जगह श्रीराधारानी और श्रीश्यामसुन्दर के लिए नपुंसक लिंग के जो शब्द हैं, उनका प्रयोग हुआ है जैसे तत्त्व शब्द है, तत्त्व शब्द का प्रयोग स्त्री लिंग में भी किया जा सकता है और पुल्लिंग में भी किया जा सकता है। राधारानी भी तत्त्व हो सकती हैं और श्रीकृष्ण भी तत्त्व हो सकते हैं। जैसे श्रीमद्भागवत में प्रारम्भ में ही कहा गया – वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं। इसमें तत्त्व शब्द का प्रयोग हुआ ठाकुर जी के लिए। श्रीराधासुधानिधि ग्रन्थ में राधारानी के लिए कहा गया – सुकुमारं विजयते। सुकुमार शब्द भी न तो पुल्लिंग का है और न ही स्त्रीलिंग का है, यह नपुंसक लिंग का शब्द है। इसी प्रकार श्रीराधासुधानिधि में एक जगह राधारानी के लिए कहा गया – नवरत्नं विजयते। नवरत्न शब्द का प्रयोग भी राधारानी के लिए किया गया। इसलिए आद्यस्य शब्द का प्रयोग राधारानी के लिए किया जा सकता है क्योंकि 'आद्यस्य' शब्द नपुंसक लिंग की षष्ठी विभक्ति है, अतः आद्यस्य शब्द राधारानी के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है तथा यह शब्द श्रीकृष्ण के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। आद्यस्य – जो श्रीराधारानी भगवान् की भी आराध्या हैं। स्कन्द पुराण में कहा गया – आत्मा तु राधिका तस्य तयैव रमणादसौ। श्यामसुन्दर की भी आत्मा हैं श्रीराधारानी इसलिए उन राधारानी से अनादि आदि सर्वकारण कोई हो नहीं सकता है। राधारानी का जन्म कहाँ हुआ ? उनके जन्म के अवसर पर दो बातें मिलती हैं। रावल में भी उनका जन्म माना जाता है और बरसाना में भी उनका जन्म माना जाता है। राधारानी ने जन्म लिया रावल में और फिर जन्म लेकर कहाँ आयीं, अनु-अयाद् – बरसाने में आ गयीं। क्योंकि रसिक महापुरुषों ने जो पद गाये हैं, उसमें जितनी लीलायें बरसाने की मिलती हैं उतनी रावल की नहीं मिलती हैं। रावल में राधारानी का जन्म तो गाया गया है किन्तु जितनी भी लीलायें हुई हैं, वे सब बरसाना धाम में ही हुई हैं। श्रीजी ने जन्म लिया रावल में और वहाँ से आयीं बरसाने में, क्यों आयीं ? ठाकुर जी को ब्रज में ब्रजलीला करनी थी और ब्रज के बाहर भी काम करना था परन्तु राधारानी क्यों आयीं, उनको क्या काम था बरसाने में ? इनका प्रमुख कार्य था महारास इत्यादि सरस लीलाओं को करना। बिना श्रीजी के आश्रय के श्यामसुन्दर रासलीला नहीं कर सकते थे। इसलिए महारास करने के लिए राधारानी रावल से बरसाना आयीं। अब कृष्ण लीला में तो ब्रह्मा जी मोहित हुए फिर राधारानी की लीला में कौन मोहित हुआ ? श्रीजी की लीला सुनकर, महारास लीला सुनकर श्रवण भक्ति के आचार्य श्रीपरीक्षित जी महाराज मोहित हो गये। 'मुह्यन्ति यत्सूरयः'। मोहित होकर परीक्षितजी ने शुकदेवजी से प्रश्न कर दिया कि श्रीकृष्ण ने तो धर्म का व्यतिक्रम किया, धर्म का उल्लंघन किया, परस्त्रियों का स्पर्श किया। अतः राधारानी और श्यामसुन्दर की महारास लीला, उनकी जितनी भी आन्तरिक श्रृंगार रस की लीलायें हैं, इन लीलाओं को सुनकर परीक्षितजी जैसे भी मोहित हो गये, जो श्रवण भक्ति के आचार्य हैं, फिर औरों के बारे में तो क्या कहना। 'तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा' श्यामसुन्दर की वंशी ध्वनि के प्रभाव से जैसे पाषाण पिघल गये, यमुना जी रुक गयीं, इस प्रकार का श्रीजी में कौन सा प्रभाव है तो गोपियाँ श्यामसुन्दर से कहती हैं कि तुम सैकड़ों वंशी ध्वनि भी एक साथ करो तो वह राधारानी के एक भी नूपुर की ध्वनि की बराबरी नहीं कर सकती है। अतः जब श्रीजी की नूपुर ध्वनि होती है तो उस समय भी प्रकृति में, सृष्टि में विरोधाभास होने लग जाता है। तरल जड़ हो जाता है, जड़ तरल हो जाता है। गोपियाँ नृत्य करना भूल जाती हैं, श्यामसुन्दर वंशी बजाना भूल जाते हैं। 'तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो'। ये श्रीजी के नूपुर का चमत्कार है।

श्रीधाम बरसाना में गोसेवार्थ श्रीरामकथा महामहोत्सव
पूज्य मोरारी बापू द्वारा गोभक्ति आधारित
श्रीरामकथा

गोसेवा एवं आध्यात्मिक साधना का दिव्य संगम

भारत की सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक परम्परा के आलोक में, आगामी २० से २८ सितम्बर २०२५ तक श्रीधाम **'बरसाना'** की पुण्यभूमि पर एक अनुपम आयोजन — **"श्रीराम कथा महामहोत्सव"**— का भव्य आयोजन किया जा रहा है । यह आयोजन न केवल सनातन धर्म की दिव्यता का उद्घोष है, अपितु गोसेवा, भक्ति और करुणा का सजीव संगम भी है ।

आयोजन की प्रेरणा और उद्देश्य

यह महामहोत्सव, ब्रजभूमि के विरक्त संत परम पूज्य पद्मश्री श्रीरमेशबाबाजीमहाराज की दिव्य प्रेरणा से संचालित श्रीमाताजी गोशाला के १८ वर्षों की गौरवगाथा को समर्पित है । इस गोशाला में वर्तमान में ६५,००० से अधिक निराश्रित एवं रोगग्रस्त गोवंश की मातृवत् सेवा की जा रही है । यह सेवा न केवल एक सामाजिक उत्तरदायित्व है, बल्कि एक जीवन्त आध्यात्मिक साधना भी है ।

श्रीवृषभानुबाबा की ऐतिहासिक गोशाला की भूमि पर स्थित यह गोधाम, पूज्य ब्रजशरणबाबाजी महाराज के समर्पित सेवा संकल्प व मान मंदिर के संतों के अथक प्रयास से त्याग, सेवा और गोभक्ति का केंद्र बन चुका है । यहाँ संचालित अत्याधुनिक गो चिकित्सालय के माध्यम से प्रतिदिन हजारों गोवंश का मानवीय चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है, साथ ही जैविक खेती, गोबर से बायोगैस, औषधियों का निर्माण तथा पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों का सृजन भी किया जा रहा है ।

कथा प्रवक्ता एवं आध्यात्मिक अनुभूति

इस आयोजन में विश्वविख्यात रामकथावाचक पूज्य श्रीमोरारीबापूजी अपनी दिव्य वाणी से 'श्रीरामचरित-कथा' की अमृतवर्षा करेंगे; उनकी वाणी में भाव की गहराई, चिंतन की ऊँचाई और भक्ति की सुगन्ध समाहित होती है । यह कथा श्रोताओं को आत्मिक परिष्कार, करुणा के संवर्धन और जीवन की सार्थक दिशा प्रदान करेगी ।

आयोजन की विशेषताएँ

- स्थान : श्रीमाताजी गोशाला प्रांगण, बरसाना, जनपद मथुरा (उत्तर प्रदेश)

- समय : - २० सितम्बर : कथा शुभारंभ (सायं ३:३० से ७:०० बजे)

- २१-२८ सितम्बर : प्रतिदिन प्रातः १०: ०० से दोपहर १:३० बजे तक

- विशेष कार्यक्रम :-

-२१ सितम्बर : श्री राधामानबिहारीलाल जी का छप्पन भोग उत्सव
- २२ सितम्बर : राधारानी मंदिर में ५६ भोग
- २३ सितम्बर : रांकोली में राधारानी डेम का उद्घाटन
- २४ सितम्बर : सुरभि कुंड में श्रीगिरिराज जी का ५६ भोग
- २५ सितम्बर : प्रख्यात भजन गायकों द्वारा भजन संध्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम
- २६ सितम्बर : विश्राम घाट पर श्रीयमुना महारानी का ५६ भोग
- २७ सितम्बर : कुसुम सरोवर पर महादीपदान

भावी योजनाएँ

मंदिर के महंत श्री ब्रजशरण जी महाराज ने गोशाला की भावी योजनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि निकट भविष्य में निम्नलिखित परियोजनाएँ मूर्तरूप लेंगी :-

- विशिष्टतम गो-अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र का निर्माण
- गो-अभ्यारण्यों की स्थापना
- २ लाख से अधिक गोवंश के संरक्षण हेतु महाअभियान
- वैदिक शिक्षण आधारित गुरुकुल विश्वविद्यालय
- बायोगैस एवं सौर ऊर्जा के विश्वस्तरीय समाधान
- गो-आधारित प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र
- ब्रज की प्राचीन संस्कृति, कुंड, पर्वत एवं स्मारकों का पुनरुद्धार
- ब्रजवासियों हेतु ५०० शय्या अस्पताल

आयोजन के मुख्य सहयोगी

इस आयोजन के मुख्य प्रेरक एवं मनोरथी श्री हरेश एन. संघवी जी हैं, जो मुंबई के वरिष्ठ समाजसेवी एवं वीना डेवलपर्स के संस्थापक हैं । वे विगत् १५ वर्षों से ब्रजभूमि की सेवा में सक्रिय हैं और मानमंदिर द्वारा संचालित यमुना आंदोलन, गोशाला सेवा एवं श्रीराधामानमंदिर निर्माण में उनका विशेष योगदान रहा है ।

मानमंदिर के महासचिव श्रीब्रजदासजी ने बताया कि इस आयोजन में देश-विदेश से हजारों भक्तजन भाग लेंगे । यह आयोजन केवल एक कथा नहीं, अपितु गोसेवा और आध्यात्मिक साधना का दिव्य संगम है । यह हर भक्त के लिए जीवन को धन्य करने का अवसर है । आप सभी भक्तों से विनम्र आग्रह है कि इस दिव्य आयोजन में सहभागी बनें और श्रीराम कथा एवं गोसेवा की साक्षात् अनुभूति प्राप्त करें ।

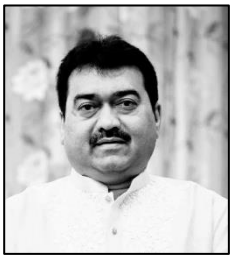

श्रीमाताजी गोशाला में आयोजित हो रहे श्रीरामकथा महामहोत्सव के सम्पूर्ण मनोरथी एवं परम गो भक्त व समाज सेवी श्री हरेश भाई के श्रीमानमंदिर द्वारा लिए गए साक्षात्कार के अंश

प्रश्न : राधे-राधे प्रभुजी । कुछ जानना चाहता हूँ—आपके हृदय में गो सेवा और ब्रजभूमि की सेवा करने की भावना कब से और कैसे आई ?

हरेश भाई जी : राधे-राधे। सबसे पहले तो मानमंदिर, माताजी गोशाला और ब्रजभूमि में सेवा का अवसर जो मुझे मिला मैं इसे श्रीराधारानी और पूज्य बाबामहाराज की कृपा समझता हूँ । आपने पूछा कि सेवा का भाव कैसे आया – मेरा जन्म पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिवार में हुआ । हमारे घर में पहले से ही ठाकुरजी विराजमान हैं और माता-पिता ने हमें संस्कार दिए कि हरिगुरु-वैष्णव की सेवा का मौका मिले, तो प्रभु की कृपा से उसे अवश्य करना चाहिए । माता-पिता की यही कृपा आज तक मुझे प्रेरित कर रही है ।

प्रश्न : अद्भुत ! आप बहुत पहले से ही सेवा में लगे हुए हैं ।

हरेश भाई जी : हाँ, पहले से ही ।

प्रश्न : मान मंदिर या पूज्य बाबा महाराज के प्रति आपका जुड़ाव कब शुरू हुआ ?

हरेश भाई जी : २०११ में मैंने पहली बार पुष्टिमार्गीय आचार्य पूज्य पंकज बाबा जी के पितृचरण परम श्रद्धेय श्रीचिमनलाल जी महाराज श्री से मुंबई में सुना कि यमुनाजी की शुद्धिकरण के लिए मान मंदिर संस्था कार्यक्रम (आंदोलन) चला रही है; उन्होंने कहा, "आप पूज्यश्री रमेश बाबाजी से मिलिए ।" जब पहली बार बाबा महाराज के दर्शन हुए और ज्ञात हुआ कि उस समय विश्राम घाट पर जो यमुना का पानी पी रहे थे, वह शुद्ध जल नहीं था, गंदे नाले का पानी था; यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ था । बाबा का प्रेम पहले दिन ही मिला, और तभी लगा कि इस संस्था से जीवनपर्यंत जुड़ना चाहिए । तब से मैं मानमंदिर और माताजी गोशाला से जुड़ गया ।

प्रश्न : वाह ! माताजी गोशाला के बारे में आपका क्या विचार है ?

हरेश भाई जी : शुरुआत में मैं केवल यमुना आंदोलन में सक्रिय था । फिर जब मैं कार्यालय में श्रीराधाप्रियजी और सुनील भैयाजी के साथ बैठता था, उन्होंने कहा, "चलो, हम आपको एक गोशाला दिखाएँगे ।" वहाँ मैंने देखा कि स्लॉटर से लाई गई गायों को संरक्षण मिलता है । वे गायें दूध नहीं दे रही थीं, लेकिन इन्हें पुनर्वास मिल रहा था । भारत में साढ़े पाँच हज़ार वर्षों से गाय का जो महत्त्व है, वह पूज्य बाबा महाराज की दृष्टि से आज भी वैसा ही है । मुझे यह बहुत अच्छा लगा, और तब से मैं गोशाला के कार्य में भी सक्रिय हो गया ।

प्रश्न : पूज्य श्रीबाबामहाराज के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है ?

हरेश भाई जी : श्रीबाबामहाराज के बारे में क्या कहूँ — कलियुग में ऐसे सद्गुरुओं के दर्शन हो रहे हैं, यह हमारा सौभाग्य है, मैंने स्वयं देखा है कि सन् २०११ में यहाँ लगभग १०-११ हज़ार गायें थीं; सन् २०१४ में यह संख्या बढ़कर २५ हज़ार हुई; और आज लगभग ६५ हज़ार से अधिक गौवंश है । सन् २०१८ में जब वित्तीय संकट आया और खर्च रुक गया, तो मैंने बाबा महाराज से पूछा कि अब ये सारी गायें कैसे रहेंगी ? उन्होंने सहजता से कहा, "तू चिंता क्यों करता है ?

राधारानी और गोमाता स्वयं व्यवस्था करेंगी ।" यह दृश्य हर दिन मेरे सामने आता है – यही गुरुदेव के आशीर्वाद-शक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव है ।

प्रश्न : वर्तमान में पूज्य बापूजी की कथा कैसे आयोजित हुई ?

हरेश भाई जी : सन् २०१८ के बाद गोशाला में फाइनेंस की समस्या बढ़ गई थी । मैं पूज्य मोरारी बापू जी से मिला करता था – सन् २०१३ में मैंने पूज्य बापू की पहले भी कथा करवाई थी । उनसे आग्रह किया कि गायों के कल्याण हेतु एक कथा के लिए समय दें । दिवाली पर उन्होंने बुलाया और कहा कि यह कथा वे नवरात्रि में राधारानी के सम्मुख देंगे । प्रेम से उन्होंने कथा की अनुमति दी और बताया कि जीवन में कई कथा कह चुके हैं, पर यह कथा विशेष है । बापूजी ने इस संस्था और गोशाला के प्रति अपना प्रेम स्पष्ट किया और कहा कि वे इस आयोजन से अत्यन्त प्रसन्न हैं ।

प्रश्न : संतों की कृपा वाकई अद्भुत होती है । देशवासियों को गोशाला संबंधी आपका क्या संदेश रहेगा ?

हरेश भाई जी : साढ़े पाँच हज़ार वर्ष पहले जब भगवान श्रीकृष्ण, श्रीराधारानी और बालगोपालों ने ब्रज में अनेकों लीलाएँ की और गाय का महत्त्व प्रकट किया, कहा जाता है कि उस समय भारत में दूध, दही और घी की नदियाँ बहती थीं अर्थात् हमारे देश में भौतिकता के साथ मानसिक-समृद्धि थी । आज भौतिक-समृद्धि तो बढ़ गई, पर मानसिक-समृद्धि कहीं घटती न जाए, यह देखना है ।

मेरा प्रस्ताव है कि हर भारतीय प्रतिदिन मात्र रुपये १० गो सेवा के लिए निकाले । यदि १०० करोड़ जनता प्रतिदिन रु. १० देती है, तो प्रतिदिन १० करोड़ रुपये बनेंगे । इससे देशभर की गोशालाएँ आर्थिक रूप से सुरक्षित होंगी और मानसिक-आध्यात्मिक समृद्धि भी बढ़ेगी ।

प्रश्नकर्ता : यह वह विचार है जिसे पूज्य बाबा महाराज ने हमारी मासिक पत्रिका "मान मंदिर बरसाना" के प्रथम पृष्ठ पर भी लिखा है । बाबा महाराज कहते हैं :- "संपूर्ण भारत को आवाहन – मजदूर से लेकर राष्ट्रपति तक, झोपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्व कल्याण के लिए गो सेवा यज्ञ में भाग ले ।" योजना है कि - प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन १ रुपये निकाले, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गोशाला परियोजना को दान कर गोरक्षा कार्य में सहभागी बन सकता है । इससे अनन्त पुण्य लाभ प्राप्त होगा । हिंदू शास्त्रों में अंशमात्र गो-सेवा की महिमा वर्णित है ।

हरेश भाई जी : बहुत सुन्दर...

प्रश्न : एक प्रश्न और – आगे के लिए आपकी क्या योजनाएँ हैं ?

हरेश भाई जी : माताजी गोशाला को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना आवश्यक है । भविष्य में किसी वित्तीय तंगी से बचने हेतु हमें योजनाबद्ध रूप से प्रबंधन करना होगा । मेरी दो-तीन योजनाएँ हैं, जिन पर मैं ब्रजशरणबाबाजी से चर्चा करूँगा । यदि श्रीराधारानी, पूज्य श्रीबाबामहाराज और श्रीबापूजी का आशीर्वाद मिला, तो राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र सहित अन्य प्रदेशों में भी मान मंदिर के अनुभव के आधार पर गोशालाएँ स्थापित की जाएँगी । स्थानीय प्रबंधन एवं तकनीकी सहायता से यह व्यवस्था सतत् रूप से चलाई जा सकेगी ।

प्रश्नकर्ता : बहुत ही सुन्दर विचार ! आपने जो अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और आर्थिक स्वावलंबन के लिए जो योजना रखी, वह अत्यन्त आवश्यक है ।

हरेश भाई जी : बिल्कुल ..... प्रधानमंत्री श्रीनरेन्द्र मोदी जी ने भी आत्मनिर्भर बनने का आवाहन किया है – हमें अपनी गोशालाओं को भी आत्मनिर्भर बनाना है । गोमाता तो सम्पूर्ण विश्व की माता हैं – पूरी पृथ्वी का पालन करती हैं । गोमाता के आशीर्वाद से ही हम आगे बढ़ते रहेंगे..... जय गो माता ! जय गोपाल !!

'गौपालन' से सर्वसमृद्धि

भावाभिव्यक्ति - परम गौ-सेवक
'श्रीब्रजशरणजीमहाराज'
श्रीमाताजी गौशाला, श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

(श्रीराजीवदीक्षितजी ने सुप्रीम कोर्ट में बताया था कि) एक स्वस्थ गाय एक दिन में १० किलो गोबर देती है और ढाई से ३ लीटर मूत्र देती है । गाय के एक किलो गोबर से ३३ किलो खाद बनती है, जिसे जैविक खाद कहते हैं । श्रीराजीव दीक्षितजी के इस आंकड़े को सुनकर कोर्ट ने पूछा कि ऐसा कैसे सम्भव है ? श्रीराजीवजी ने कहा कि आप हमें समय दीजिये और स्थान दीजिये । हम आपको यहीं सिद्ध करके बताते हैं । जब कोर्ट ने आज्ञा दी तो राजीवजी ने उनको सब बात पूरा करके दिखाया और कोर्ट से कहा कि आई.आर.सी. के वैज्ञानिक को बुला लो और इस बात का परीक्षण करा लो । तब कोर्ट ने गाय का गोबर जाँच के लिए भेजा । वैज्ञानिकों ने बताया कि इसमें १८ पोषक तत्त्व हैं, जो सभी खेतों की मिट्टी को चाहिए जैसे मैंगनीज, फास्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन, कोबाल्ट, सिलिकोन आदि-आदि । रासायनिक खाद यूरिया में मुश्किल से तीन पोषक तत्त्व होते हैं । अतः गाय के गोबर की खाद रासायनिक खाद यूरिया से १० गुना अधिक ताकतवर है, यह तर्क कोर्ट ने स्वीकार कर लिया । राजीव दीक्षितजी ने कोर्ट से कहा कि यदि आपके प्रोटोकॉल के विरुद्ध न हो तो आप हमारे साथ चलिए और देखिये कि कहाँ-कहाँ हम १ किलो गोबर से ३३ किलो खाद बना रहे हैं । उन्होंने कहा कि मैं अपने खुद के गाँव में ऐसा करता हूँ । मेरे माता-पिता दोनों ही किसान हैं । पिछले १५ साल से हम लोग गाय के गोबर से ही खेती करते हैं । यदि एक किलो गोबर है तो उससे ३३ किलो खाद बनती है और एक किलो गोबर का अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भाव है ६ रुपये । इस तरह प्रतिदिन १० किलो गोबर से ३३० किलो खाद बनेगी, जिसे ६ रुपये किलो के हिसाब से बेचें तो १८०० से २००० रुपये प्रतिदिन गाय के गोबर से मिलते हैं । गाय माता को गोबर देने में कोई रविवार का अवकाश अथवा साप्ताहिक अवकाश नहीं होता है, यह तो हर दिन मिलता है । अब यह साल भर में कितना हुआ ? १८०० का ३६५ से गुणा कर लो । गाय की सामान्य आयु २० वर्ष है और वह जीवन के अन्तिम दिन तक गोबर देती है । अगर १८०० का गुणा ३६५ और २० से करो तो एक करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि केवल गाय के गोबर से प्राप्त हो जायेगी । हजारों-लाखों वर्ष पहले हमारे शास्त्रों में लिखा है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास है किन्तु मैकाले के मानसपुत्र, जो उसकी चलायी हुई आधुनिक शिक्षा से पढ़कर निकले हैं, जिन्हें अपना धर्म, संस्कृति-सभ्यता, ये सभी पाखण्ड ही प्रतीत होते हैं, जो सदा इस बात का मजाक उड़ाते हैं कि गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास हो सकता है तो राजीवजी का उन सबके उपहास का यह उत्तर है क्योंकि यह बात सिद्ध होती है कि गाय के गोबर से खेती करके अनाज उत्पादन करके धन कमाया जा सकता है और पूरे भारत का पेट भरा जा सकता है । अब बात करते हैं गो मूत्र की । प्रत्येक स्वस्थ गाय से प्रतिदिन दो से सवा लीटर मूत्र तो उत्पन्न होता ही है । गोमूत्र से अनेकों औषधियाँ बनती हैं; डायबिटीज, आर्थराइटिस, Bronchitis, Bronchial asthma, osteomyelitis तथा टी.बी. जैसे गम्भीर रोगों की औषधियाँ गोमूत्र से बनती हैं । गौमूत्र से ४८ रोगों की औषधियाँ बनती हैं । गाय के एक लीटर मूत्र की बाजार में दवा के रूप में कीमत ५०० रुपये है, वह भी भारत के बाजार में । अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में तो इसकी कीमत इससे भी अधिक है । अमेरिका में गोमूत्र पेटेन्ट है और अमरीकी सरकार हर साल भारत से गाय के मूत्र का आयात करती है और वहाँ के वैज्ञानिक इससे कैंसर की, डायबिटीज की दवा बनाते हैं तथा अमेरिका में गोमूत्र पर एक दो नहीं, तीन पेटेंट हैं । इस प्रकार गाय के मूत्र से लगभग ३ हजार रुपये की आमदनी होती है । इस तरह एक साल के लिए ३००० का ३६५ से गुणा किया तो हुआ १०९५०००, २० साल के लिए ३०० को ३६५ और २० से गुणा करो तो २१,९००००० ; इतना तो गाय के गोबर और मूत्र से ही एक साल का हो गया । इसके अतिरिक्त गाय के गोबर से एक गैस निकलती है, जिसे मीथेन कहते हैं । मीथेन वही गैस है, जिससे आप अपने रसोईघर का सिलेण्डर चला सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर चार पहियों वाली गाड़ी भी चला सकते हैं । जैसे LPG गैस से गाड़ी चलती है, वैसे ही मीथेन गैस से भी गाड़ी चलती है । इसलिए हम सभी लोगों को विशुद्ध भावपूर्वक तन-मन-वचन से अवश्य ही गौसेवा करनी चाहिए ।

श्रीरक्षाबन्धन-रसोत्सव

सनातन संस्कृति में 'श्रीरक्षाबन्धन-महापर्व' का विशेष महत्त्व है, जिसके स्मरण-चिंतन से ये प्रतीत होता है कि रक्षा रूपी बन्धन की अति आवश्यकता है, इसके बिना सम्पूर्ण सृष्टि की सत्ता व महत्ता बिल्कुल शून्य ही है अर्थात् चराचर जीवों से लेकर के परम शक्ति व शक्तिवान् (श्रीराधामाधव युगल सरकार) तक को रक्षामय बन्धन बहुत जरूरी है । 'रक्षा का बन्धन' सद्भावनाओं (सद्विचारों) के सदुपदेश द्वारा अथवा भावात्मक सूत्र-बंधन के माध्यम से सम्पन्न होता है । किसी भी प्रकार से भावनाओं का संवर्द्धन-संपोषण करना ही 'रक्षाबन्धन' कहलाता है । रक्षाबन्धन की पद्धति का शुभारम्भ श्रीप्रिया-प्रियतम श्यामाश्याम से ही होता है, परस्पर में ही श्रीयुगल एक-दूसरे को राखी बाँधकर परम मंगल की कामना करते हैं । 'राखी' का अर्थ है 'रखने वाली' अर्थात् जो हमारी भक्तिमय भावनाओं को रखकर पोषित-वर्द्धित करती है, उसे 'राखी' या रक्षा-सूत्र कहते हैं । अतः इस रक्षासूत्र के बाँधने के उत्सव को ही 'रक्षाबंधन' कहते हैं । सखी-सहचरियाँ व गोपीजन भी सदा 'मंगल ही मंगल हो' इस अभिलाषा से श्रीराधामाधव युगल रसराज को राखी बाँधकर मंगलगान करती हैं । भावनाओं का बंधन ही रक्षाबन्धन है, इसीलिये समस्त भक्त-प्रेमीजन तत्सुखसुखित्वमय भावों के अनुसार अपने-अपने इष्ट को मंगल-सूत्र (रक्षासूत्र) बाँधते हैं । यहाँ तक कि यशोदा मैया भी अपने लाला कन्हैया को वात्सल्य भाव में रक्षा का सूत्र (राखी) बाँधती हैं कि हमारे लाला की हर तरह से रक्षा हो, इसका कभी भी अमंगल न हो, सदा विजय को ही प्राप्त हो । इस प्रकार से रक्षाबन्धन की परम्परा प्रारम्भ से ही चली आ रही है, लौकिक जगत् में ब्राह्मण, ऋषि-मुनि-संतजन भी कल्याण की कामना से रक्षासूत्र बाँधते हैं । श्रीलक्ष्मीजी ने राजा बलि को भाई मानकर राखी बाँधी थी । बहिन सुभद्रा अपने भाई कृष्ण-बलराम को राखी बाँधती हैं । इस प्रकार से ये विशुद्ध भावमय परम पवित्र महापर्व है, जो ब्रजभक्ति का सर्वाधिक संपोषण-संवर्द्धन करता है । (बाबाश्री के सत्संग 'रक्षाबन्धन-महिमा' (२/८/२०१२) से संकलित) – रक्षा बन्धन का एक मन्त्र है – 'येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबलः .....' 'जिस रक्षा से राजा बलि बाँधे गये थे, वही रक्षा हम बाँध रहे हैं ।' – राखी बाँधने वाला यह मन्त्र बोलता है चाहे ब्राह्मण हो चाहे बहन हो । मूल में रक्षा बन्धन तो ब्राह्मणों का पर्व है । ब्राह्मण को सभी को रक्षा बाँधने का अधिकार है । यद्यपि पीछे यह लोभ के कारण बदल गया । पूरब (प्रयाग) में जब हम लोग रहते थे तो मेरे बचपन में वहाँ बहुत से ब्राह्मण आते थे । वे रक्षा बांधते थे तो उनको कुछ पैसे दिए जाते थे किन्तु वे तो लोभ से बाँधते हैं, ऐसी स्थिति में वे रक्षा क्या करेंगे ? रक्षा बन्धन के पीछे भाई-बहन का भी एक प्रसंग है । वामन भगवान् ने राजा बलि के महल में द्वारपाल होना स्वीकार किया था । इसका उल्लेख श्रीमद्भागवत में भी है । स्वयं बलि ने भगवान् से कहा कि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता हूँ । मेरे शरीर पर आप अपना तीसरा पग रख दीजिये । भगवान् ने बलि के सिर पर अपना पाँव रख दिया । यह देखकर बलि के पितामह प्रह्लाद जी ने कहा कि ऐसी कृपा तो न ब्रह्मा को मिली, न शंकर को और न ही लक्ष्मी को ।

नेमं विरिञ्चो लभते प्रसादं न श्रीर्न शर्वः किमुतापरे ते ।
यन्नोऽसुराणामसि दुर्गपालो विश्वाभिवन्द्यैरपि वन्दिताङ्घ्रिः ॥ (श्रीभागवतजी ८/२३/६)

प्रह्लाद ने भगवान् से कहा कि आप हमारे पहरेदार बन गये । असुरों के द्वारपाल बन गये । इसी भाव को बलि ने भी कहा है कि हम नीच असुरों पर आपने जैसी कृपा की, ऐसी कृपा तो किसी पर भी नहीं हुई है ।

अहो प्रणामाय कृतः समुद्यमः प्रपन्नभक्तार्थविधौ समाहितः ।
यल्लोकपालैस्त्वदनुग्रहोऽमरैरलब्धपूर्वोऽपसदेऽसुरेऽर्पितः ॥ (श्रीभागवतजी ८/२३/६)

किसी लोकपाल को ऐसी कृपा नहीं मिली, जो आपने मुझ नीच असुर पर की । आज तक ऐसी कृपा किसी पर नहीं हुई ।

इस तरह भगवान् राजा बलि के द्वारपाल बन गये । यह स्वयं बलि ने कहा है और भगवान् ने भी कहा है ।

इन्द्रसेन महाराज याहि भो भद्रमस्तु ते । सुतलं स्वर्गिभिः प्रार्थ्यं ज्ञातिभिः परिवारितः । (श्रीभागवतजी ८/२२/३३)

महाराज इन्द्रसेन ! तुम सुतललोक में जाओ, वहाँ मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा; तुम्हारे विरोधियों को मेरा चक्र काट देगा ।

रक्षिष्ये सर्वतोऽहं त्वां सानुगं सपरिच्छदम् । सदा सन्निहितं वीर तत्र मां द्रक्ष्यते भवान् । (श्रीभागवतजी ८/२२/३५)

मैं तुम्हारे परिवार की और राज्य की भी रक्षा करूँगा । वहाँ तुम सदा मुझे अपने पास में देखोगे । तुम्हारा आसुरी भाव नष्ट हो जाएगा । इसी बात को राजा बलि ने भगवान् से कहा कि आप हमारे सभाभवन के दुर्गपाल (रक्षक) बन गये हैं ।

जब भगवान् ने सुतल लोक में राजा बलि की सभा में प्रवेश किया तो ऐसा कहते हैं कि उसमें ५२ दरवाजे थे । भगवान् ने ५२ रूप बनाये । इसीलिए वामन भगवान् के शरीर की नाप भी ५२ अंगुल बतायी जाती है । ५२ रूप बनाकर भगवान् हर दरवाजे पर पहरा देते हुए खड़े रहते थे । एक बार जब रावण बलि को जीतने के लिए सुतल लोक में गया तो वामन भगवान् ने केवल अपने पैर के अंगूठे के प्रहार से रावण को फेंक दिया तो वह लंका में जाकर गिरा । इससे पता चलता है कि भगवान् सदा बलि की रक्षा करते हैं और रावण बलि पर विजय नहीं प्राप्त कर सका । वामन रूप बनाकर भगवान् दरवाजों पर खड़े रहते थे । एक बार लक्ष्मीजी सुतल लोक में गयीं और उन्होंने राजा बलि को अपना भाई बनाकर उनके हाथ में राखी बाँधी । राखी बाँधने पर भाई बहन को कुछ देता है । जब लक्ष्मीजी ने बलि को राखी बाँधी तो बलि ने पूछा कि बहन ! मैं तुमको क्या दूँ ? लक्ष्मीजी तो सुतल लोक गयीं थीं अपने स्वामी भगवान् को वहाँ से मुक्त कराने के लिए लेकिन वे महासती हैं । उन्होंने अपने स्वामी के विरुद्ध कार्य करना ठीक नहीं समझा क्योंकि वे समझ गयीं कि मेरे पति अपनी ही इच्छा से राजा बलि के यहाँ दुर्गपाल बने हुए हैं । भगवान् को अपने भक्तों की सेवा करने में आनन्द आता है । लक्ष्मी जी ने इतना अवश्य बलि से कहा कि तुम्हारी सभा में बावन दरवाजे हैं । एक ही दरवाजा रखो जिससे कि एक ही रूप से भगवान् यहाँ रहें, नहीं तो उनको बावन रूप बनाने पड़ते हैं । ऐसा लक्ष्मीजी ने दक्षिणा में राजा बलि से माँगा । तभी से रक्षा बन्धन का पर्व संसार में चला है । बहन भी माँगती है और ब्राह्मण भी माँगते हैं । 'येन बद्धो बलि राजा.....' जब कोई ब्राह्मण राखी बाँधता है या बहन बाँधती है तो यह मन्त्र बोला जाता है । रक्षा के लिए राखी बाँधी जाती है किन्तु आजकल यह पर्व पैसे के लोभ में बदल गया है । राखी बाँधने पर बहन भाई से कुछ लेती है किन्तु प्राचीन काल में केवल रक्षा की कामना से राखी बाँधी जाती थी । अस्तु, लक्ष्मीजी ने राजा बलि को अपना भाई बनाया । तभी से संसार में भाई-बहन के सम्बन्ध के रूप में यह पर्व चला । द्वापर युग में श्रीकृष्ण-बलराम की बहन थीं सुभद्रा । वह भी अपने भाइयों कृष्ण-बलराम को राखी बाँधती थीं । जगन्नाथ पुरी में इस सम्बन्ध के पद और उपासना भी है । वहाँ मन्दिर में दोनों भाइयों के साथ सिंहासन पर सुभद्राजी विराजमान हैं । इस तरह रक्षा बन्धन का पर्व चला और चलता आ रहा है । हम लोगों को भी परस्पर में रक्षा और सौहार्द्र का भाव रखना चाहिए । यही सच्चा रक्षा बन्धन है । अशुभ प्रवृत्तियों से भगवान् बचायें । वेदों में मन्त्र है कि भगवान् रक्षा करें और भगवान् ने कहा भी है –

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः । नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥ (श्रीगीताजी – १०/११)

हृदय के अन्धकार को मैं ही मिटाता हूँ । मैं मनुष्य की भावनाओं में कृपा से आता हूँ और ज्ञान का दीपक जलाता हूँ तथा अज्ञान को नष्ट करता हूँ । वस्तुतः भगवान् ही जीव के अज्ञान को हटाते हैं और उसकी रक्षा करते हैं । इस बात को भागवत में कई जगह शुकदेवजी ने कहा है जैसे –

शुश्रूषोः श्रद्धानस्य वासुदेवकथा रुचिः । स्यान्महत्सेवया विप्राः पुण्यतीर्थनिषेवणात् ॥ (श्रीभागवतजी १/२/१६)

मनुष्य महापुरुषों के पास जब जाता है तो महत्सेवा करता है, तब उसकी भगवान् की कथा में रुचि हो जाती है । वहाँ वह भगवान् के गुण सुनता है, कथा सुनता है तो भगवान् उसके हृदय के अभद्रों को मिटा देते हैं । उनके मिटने पर उसको शुद्ध भक्ति की प्राप्ति होती है । इसलिए भगवान् ही हृदय के समस्त अभद्रों को नष्ट करते हैं । भगवान् ही अन्तःकरण को भी साफ़ करते हैं, केवल उनकी कथा सुनो ।

पिबन्ति ये भगवत आत्मनः सतां कथामृतं श्रवणपुटेषु सम्भृतम् ।
पुनन्ति ते विषयविदूषिताशयं व्रजन्ति तच्चरणसरोरुहान्तिकम् ॥ (श्रीभागवतजी २/२/३७)

इसी बात को परीक्षितजी ने भी कहा है –

श्रृण्वतः श्रद्धया नित्यं गृणतश्च स्वचेष्टितम् । कालेन नातिदीर्घेण भगवान् विशते हृदि ॥ (श्रीभागवतजी २/८/४)

श्रद्धापूर्वक नित्य कथा सुनने से श्रीभगवान् अति शीघ्र हृदयकमल के भाव रूपी आसन पर विराजमान हो जाते हैं ।

तर्ज – रससागर गोविन्द नाम है, रसना जो तू गाये ..... ।

श्रीभक्ति का बन्धन रक्षाबन्धन, भवबन्धन बच जाये - भवबन्धन बच जाये ।
भावुकता में सार्थक जीवन, हिये सरस हो जाये - हिये सरस हो जाये ॥
भक्तिभाव सार है जीवन, सहजहिं पावैं श्रीचरनन;
सत्संग से छूटै भवबन्धन, रसबन्धन आ जाये - रसबन्धन आ जाये ।
भक्त जनन से होवै रक्षा, नित्य धाम लौ जाये;
राधामाधव करते रक्षा, रक्ष्य भाव जग जाये - रक्ष्य भाव जग जाये ।
रक्षा बिन सत्ता है सूनी, महिमा भी सब जाये;
अति आवश्यक है संरक्षा, संपोषण हो जाये - संपोषण हो जाये ।
राखी बाँधत हैं घनस्याम, मंगलता मन भाये;
श्यामा की उज्ज्वलता चाहैं, कृपादृष्टि मिल जाये - कृपादृष्टि मिल जाये ।
मन परिपूरन करतीं श्यामा, मधुसूदन हिय छाये;
रक्षासूत्र कृष्ण के कर में, सुन्दरता हि लुभाये - सुन्दरता हि लुभाये ।
श्रीसहचरियाँ मंगल गावैं, सज-धज के सब आवैं;
ब्रजगोपीजन राखी बाँधैं, युगल किशोर सजायें - युगल किशोर सजायें ।
भावों का है रक्षाबन्धन, भाव-सूत्र कहलाये;
यशुमति मैया अपने लालाय, बाँध सूत्र सुख पाये - बाँध सूत्र सुख पाये ।
रमा-सुभद्रा राखी बाँधैं, मनवांछित फल पाये;
भाई-बहिन का प्रेम है निर्मल, मधुर भाव सरसाये - मधुर भाव सरसाये ।
रक्षाबन्धन पहलौ पर्व है, विप्रन कौ ही कहाये;
बाम्हन-ऋषि-गुरु बाँधैं रक्षा, भाव-विजय हो जाये - भाव-विजय हो जाये ।
शुद्ध प्रेम का है ये उत्सव, ब्रज-भक्ति दरसाये;
सत्य सनातन संस्कृति गौरव, भारत माँ हरषाये - भारत माँ हरषाये ॥

श्रीभारतवर्ष का ७९ वाँ स्वतंत्रता दिवस

लौकिक दृष्टि में बहुत समय से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ 'भारतवर्ष' '१५ अगस्त १९४७' को विदेशी-विधर्मियों से मुक्त होकर स्वतंत्र हुआ था । इसलिये १५ अगस्त को सम्पूर्ण भारत में 'स्वतंत्रता दिवस' मनाया जाता है । वस्तुतः स्थूल दृष्टि से स्वतन्त्र हो जाना ही वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है अपितु आध्यात्मिक रूप से स्वतन्त्रता ही असली स्वतंत्रता है । 'स्वतंत्रता' का शाब्दिक अर्थ है – 'अपना शासन होना' । अतः 'आध्यात्मिक स्वतंत्रता' का अर्थ है – अपने स्वरूप में स्थित होकर अपनी समस्त इन्द्रयों पर शासन करना, जिसे 'इन्द्रिय-विजयी' या 'संयमी' कहते हैं, वही सच्चा भक्त भी बनता है । भारतवर्ष में देश की बाह्य स्वतंत्रता से भी अधिक महत्त्व 'अध्यात्म की स्वतंत्रता' का है क्योंकि भारतीय संस्कृति की नींव 'अध्यात्म' ही है अर्थात् हमारे देश की संस्कृति में भक्ति की प्रधानता है । हमारी सनातन संस्कृति भक्तिमय है, जिसका कभी भी विनाश

नहीं होता है; इन्हीं भावनाओं से भावित होकर हमारे देशप्रेमियों ने विदेशी आक्रान्ताओं के उपद्रव से अपने देश को बचाने के लिए हर तरह से रक्षा के उपाय किए हैं; जिसमें हमारे राष्ट्रभक्तों को अनेक प्रकार की घोर यातनाएँ भी सहनी पड़ी हैं । यदि विद्रोहियों द्वारा दिए गए उन क्रूर कष्टों को हम थोड़ा-सा भी स्मरण करेंगे तो आँखों में अपने आप आँसू आ जायेंगे कि हमारे भारत माता के वीर सपूतों ने अपनी संस्कृति की संरक्षा के लिए कितना बड़ा बलिदान दिया है । बस, आज के दिन हम सब उन अमर वीर शहीदों को कोटिशः नमन-वंदन करते हुए यही शिक्षा लेते हैं कि हमें भी जीवनभर अपने देश की सभ्यता-संस्कति के रक्षण-पोषण के लिए प्राणों की परवाह किए बिना हर प्रकार से निरन्तर प्रयासरत रहना है । लौकिक रूप से देश के विकास के मूल में आराधन-शक्ति (भक्ति की शक्ति) ही होती है; इसीलिये हम सभी भारतीय भक्तजनों को भारतवर्ष की वास्तविक सेवा के लिए नित्य नियम से 'आराधना' अवश्य करनी चाहिए । सनातन-धर्मियों को 'भगवान् की भक्ति व भारत की भक्ति' दोनों आवश्यक हैं क्योंकि देश व धर्म का पारस्परिक अभिन्न सम्बन्ध है । राष्ट्र की सच्ची सफलता व सार्थकता विशुद्ध भक्तिमय धर्म से ही होती है । आदर्श धर्म का पालन किए बिना राष्ट्र का वास्तविक विकास नहीं हो सकता । वस्तुतः धर्म से ही देश का संवर्द्धन व संपोषण होता है, धर्म ही देश को बचाता है । धार्मिक व आध्यात्मिक जनों में भी राष्टभक्ति का होना उतना ही आवश्यक है, जितना कि भक्तिमार्ग पर चलने वालों के लिए धाम की निष्ठा का होना आवश्यक है । धामनिष्ठा के बिना भक्ति अधूरी ही है, भक्ति की परिपक्वता धामप्रेम से ही होती है अर्थात् जब सर्वात्मभाव से श्रीधाम की शरणागति हो जाती है, तभी भक्ति के भाव यथार्थ रूप से उत्पन्न होते हैं । श्रीधाम की शरणागति से तात्पर्य है – 'धाम में अनन्य निष्ठा व अखण्डवास हो' । हमारे सनातन धर्म के जितने भी अवतरित धाम (तीर्थ) हैं, वे सभी भारतवर्ष में ही हैं अर्थात् एक रूप में धाम की भक्ति को ही राष्ट्रभक्ति भी कहा गया है क्योंकि बिना भारतदेश के भगवान् के धामों की भी कल्पना नहीं की जा सकती है । जब भारतवर्ष संरक्षित-संवर्द्धित व विकसित होगा तो श्रीभगवान् के समस्त तीर्थ-धामों में भी स्वाभाविक ही चमक आ जाएगी । अतः 'भारत' की भक्ति व सेवा से 'धाम' की भक्ति-सेवा तथा धाम की भक्ति-सेवा से ही भगवान् की भक्ति-सेवा पूर्ण होती है । कथनाशय यही है कि जब हम भारतवर्ष की भक्ति करते हैं अर्थात् भारतदेश के प्रति प्रेम व सेवाभाव रखते हैं, तभी हमारी भगवद्भक्ति सही रूप में पूर्ण होती है । हमारे अन्दर भगवान् की भक्ति है तो उसकी सबसे बड़ी पहिचान यही है कि हमारे भीतर राष्ट्र की भक्ति अवश्य होगी । यदि हमारे मन में राष्ट्र का प्रेम है तो उसकी विशेषता यही है कि हमारे चित्त में भगवान् का प्रेम अवश्य होगा । देशप्रेम व भगवत्प्रेम परस्पर एक-दूसरे का सम्पूरक है । स्वदेश की महिमा को जानने से ही हृदय में देशहित का चिन्तन होता है । देश की गौरव-गाथा को सुनने-कहने से लोगों में राष्ट्रप्रेम जाग्रत होता है । हमारे देशभक्तों ने देश के स्वरूप का संरक्षण करने के लिए कितने कष्ट सहे, विधर्मियों द्वारा अनेकों यातनाएँ सहकर भी अन्तिम श्वाँस तक स्वदेश की मंगल-कामना करते हुए जयकार बोलते रहे; ऐसे जीवन-प्राण-समर्पित भारत माता के वीर सपूतों को याद करने से, उन्हें श्रद्धा-सुमन समर्पित करने से अंतःकरण में देश के प्रति सच्ची भाव-भक्ति उत्पन्न होती है । इसलिए श्रीभगवान् की भक्ति व राष्ट्रभक्ति एक रथ के दो पहिये हैं, दोनों की समान रूप से अति आवश्यकता है । **तर्ज – भूलैं चाहे याद करैं, ये काम हमारा है । हमको तो वो निर्मोही, प्राणों से भी प्यारा है ..... ॥**

संस्कृति भारत माँ की, लगती अति प्यारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
हे भाई ! जानो ये श्रीरामकृष्ण की है, भगवंत-संत आते गरिमा भारत की है;
आराधन-शक्ति की, रज-कण आधारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
जो मूल धर्म भी है, सबकौ सम्बल देती; पंथों की जननी है, पालन सबका करती;
मिलती जन-जन शिक्षा, संसार आभारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
आधार जगत की है, आध्यात्म की है पोषक; सेवा सच्ची करती, वात्सल्य-प्रेम द्योतक;
है सच्ची गुरु सबकी, विमुखों ने बिसारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥

प्रगट-लुप्त होती, असुरों के कारण से; परिणाम विजय होती, श्रीभक्ति की शक्ति से;
आराधन संतों का, चिंतन भी जारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
स्वदेश रूप सच्चा, है उभर रहा जागो; हे भारत वीर सपूतो ! अब छोड़ मोह भागो;
करना प्रसन्न माँ को, ये आशा धारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
देश प्रेमियों के, बलिदान को याद करो; पिटते-मरते कहते, भारत-जयकार करो;
देश-शहीदों के, हम ऋणी-आभारी हैं । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
हे भारत के वीरो ! बान सुदृढ रखना; निज गौरव-गाथा को, सदा उज्जवल ही करना;
आशीष सदा माँ का, शुभ-मंगलकारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
अन्तिम जीवन तक, सेवा स्वराष्ट्र करना; माँ भारत की जय हो, ये ही कहते रहना;
अमर हुए हैं वे, जिन आज्ञाधारी है । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥
भविष्य है उज्जवल, श्रीभारत माता का; करते सब सम्मान, भारत के वैभव का;
हम शत-शत करते नमन, हिन्दू नर-नारी हैं । सदा सत्य सनातन है, महिमा भी न्यारी है ॥

श्रीब्रजरसनिधि 'कृष्णावतार'

श्रीलीलापुरुषोत्तम परमप्रेमावतार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतरण इस धराधाम श्रीमथुरापुरी में भाद्रमास, कृष्णपक्ष, अष्टमीतिथि, रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि को कंस के कारागार में हुआ था । श्रीकृष्णजन्म के समय सहज ही समस्त प्रकृति रसमयी हो गई; ब्रह्माजी, शंकरजी व समस्त देवगण स्तुति करने लगे । श्रीदेवकी-वसुदेवजी भी परमानन्द में भर गए । भगवान् श्रीकृष्ण के सम्पूर्ण लीलाकाल में (जन्म से लेकर नित्यधामगमन तक) आपत्तियाँ-विपत्तियाँ आती ही रहीं – जैसे जन्म जेल में हुआ, फिर विषम परिस्थितियों में श्रीवसुदेवजी गोकुल पहुँचाने गये, वहाँ भी छठवें दिन पूतना मारने को आ गयी, इसके बाद कंस द्वारा भेजे हुए असुर कृष्ण को मारने के लिए अनेक रूपों में आते रहे । इस प्रकार से 'ब्रजलीला, मथुरा लीला, द्वारिका लीला' तीनों लीलाओं में अनेक संकटों का सामना करना पड़ा । श्रीकृष्णलीला से ये प्रदर्शित होता है तथा शिक्षा भी मिलती है कि संसार में रहकर जीवन में अनेक आपत्तियाँ अवश्य आती हैं, उन सबका सामना करते हुए अपने कर्तव्य-पथ पर अविचल भाव से निरन्तर चलते रहना चाहिए । श्रीकृष्ण का प्राकट्य विशेष रूप से समस्त जीवों को विशुद्ध प्रेम प्रदान करने के लिए ही हुआ था; वास्तव में प्रेममार्ग में विपत्तियाँ आती ही हैं, कृष्णलीला से ये अच्छी तरह से स्पष्ट हो जाता है । श्रीकृष्ण के प्राकट्य से विशुद्ध प्रेम का प्रसार हुआ, जिससे परम मंगल हुआ । श्रीब्रज-वसुन्धरा में श्रीकृष्ण का अवतार चराचर जीवों के लिए बहुत बड़ी कृपा-करुणा व असीम अनुकम्पा थी; क्योंकि श्रीभगवान् के अनेक रूपों में अन्य अवतार तो हो चुके थे लेकिन ब्रजभावभावित बालकृष्णलाल की विशुद्ध प्रेम-रस-माधुर्यमयी बाललीलाओं के लिए परम प्रेममय श्रीकृष्णावतार होना शेष था । वस्तुतः श्रीकृष्ण ही समस्त अवतारों के मूल अंशी हैं, इसीलिये श्रीकृष्णावतार ही परिपूर्णावतार है, अतः 'श्रीकृष्ण' तत्त्व में ही परम प्रेम-रस-माधुर्य-कृपा-करुणा इत्यादि सुसमाहित है । ब्रजभूमि में कृष्णावतार होने से समस्त प्रकृति सहज ही रसमयी हो जाती है तथा सरस लीलाओं के लिए श्रीराधिकारानी के अवतरित होने की भूमिका बन जाती है, अतएव ब्रजमण्डल के लिए कृष्णावतार का होना सर्वप्रथम अति आवश्यक था । श्रीकृष्ण

ही सबसे बड़े ब्रजप्रेमाराधक व राधाराधक हैं, जिनकी आराधना-शक्ति से सम्पूर्ण ब्रजमण्डल राधामय हो जाता है; इन भावों से भावित पूज्य श्रीबाबामहाराज द्वारा रचित 'रसिया-रसेश्वरी' के एक रसिया की पंक्ति है – "राधा रस में ब्रज डार्‌यो, राधा के रसिया श्याम ने ।" स्वयं श्रीकृष्ण ने श्रीजी की आराधना करने से सम्पूर्ण ब्रजभूमि राधारसमय बना दी है । वस्तुतः श्रीकृष्ण-कृपा से ही श्रीराधाभाव-प्रेम की प्राप्ति होती है, क्योंकि श्रीकृष्ण द्वारा ही हमें 'राधा-आराधना' करने की सबसे बड़ी शिक्षा मिलती है । ब्रजरसिकजन 'श्रीश्यामसुंदर' की मनमोहिनी छवि का वर्णन करते हुए कहते हैं – "ब्रजमण्डल का ही सितारा नहीं, जगती तल का उजियारा है तू । मनमोहकता इतनी तुझमें, सबके मन को अति प्यारा है तू ॥ किस भाँति बिसारूँ बता तुझको, मनमोहन प्राणपियारा है तू ॥" इसी प्रकार श्रीनन्दनन्दन की रसमाधुरी में डूबे हुए श्रीरसखानजी का भाव है – "कहा रसखान सुख-संपति सुमार महँ, कहा महायोगी ह्वै लगाये अंग-छार को । जप बार-बार, तप संयम अपार व्रत, तीरथ हजार, अरे बूझत लवार को । सोई है गँवार, जिहि कीनो नहिं प्यार; नहिं सेयो दरबार यार, नन्द के कुमार को ॥" समस्त साधनों की सच्ची सफलता नन्दनंदन के प्रेम-प्राप्ति में ही है, जो परम प्रेममय रस का दरबार एकमात्र ब्रज-वसुन्धरा ही है; इसी सरस श्रीधाम के आश्रय से ही ब्रजभाव की प्राप्ति होती है । रसेश्वर श्रीकृष्ण के अवतरण से ब्रजमण्डल की शोभा सर्वाधिक बढ़ जाती है, ये बात स्वयं ब्रजगोपिकाओं ने कही है – **'जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः ।'** कृष्ण के प्राकट्य से ब्रजभूमि अत्यधिक गौरवशालिनी होकर परम मंगलकारिणी बन जाती है । यहाँ तक कि सम्पूर्ण ब्रजमण्डल प्रेमरस के वैभव से समृद्धशाली हो जाता है – 'तत आरभ्य नन्दस्य व्रजः सर्व समृद्धिमान् ।' हर तरह से ब्रजधराधाम प्रेम-रस-माधुर्य से भर जाता है, श्रीकृष्ण-गुणगान रूपी परमानन्द में जड़-चेतन प्रकृति डूब जाती है । चारों ओर श्रीकृष्णजन्मोत्सव की मंगल-बधाइयों का नृत्य-गान होता है, सर्वत्र कृष्णरस से सराबोर परमानन्दमय वातावरण हो जाता है ।

रसिया-तर्ज – तेरे बिना मैं रोई रे, साँवरिया तेरी याद में ..... ।

आधी रात में जनम लियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
आठें भाद्र कृष्ण की आई, दुंदुभी नभ देव बजाई;
विषम समय अनुकूल कियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
श्रीकृष्ण प्रेम की प्यासी, हुई प्रगट रस-रासी;
गोपिन मन पूरन कियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
श्रीकृष्ण-दरस की इच्छा, करते तप लैके भिच्छा;
प्रेम-देन अवतार धर्‌यौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
हैं ऋषी-मुनी बनीं गोपी, जन्मी ब्रज में पद रोपी;
तप-आराधन सिद्ध कियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
ब्रजमण्डल अब चमक्यौ, प्रेम परम में फूल्यौ;
महाप्रेम प्राकट्य कियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
मधुर प्रेमरस बहवै, जीव चराचर गावैं;
प्रेम कौ अनुपम रूप लियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
अवतार कृष्ण कौ सार है भैया, परम पार होय जीवन नैया;
राधा-आज्ञा अवतार लियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
श्रीकृष्ण-जन्म की महिमा, है श्रीजी से अति गरिमा;
भाव-प्रेम में बोर दियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।
गोकुल में मनायौ उत्सव, नन्दोत्सव महामहोत्सव;
ब्रजवासिन्ह आनन्द दियौ है, कन्हैया प्यारे लाल ने, साँवरिया प्यारे कान्ह ने ।

ब्रज-संरक्षणार्थ 'श्रीबल्देव-प्राकट्य'

श्रीबलरामजी का अवतरण भाद्रपद, शुक्ल, षष्ठी, स्वाति नक्षत्र में मध्याह्न के समय ब्रज में वसुदेवपत्नी श्रीरोहिणीजी के गर्भ से हुआ था । (श्रीगर्गसंहिता, बलभद्रखण्ड – ५/९)

रसिया-तर्ज – जब से देख्यौ बलवीर, मन कूँ प्यारो लगै ..... ।

प्रगटैं हैं भैया बलवीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
कृष्ण-प्रेम-सेवा-वीर, गोरी छवि प्यारी लगै ॥
कृष्ण के हित में तत्पर रहते,
सेवा काजे अग्रज बनते;
भाव-प्रेम की पीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
कृष्णप्रेम सों जन्मे जग में,
दर्शन-सेवा से सुख मन में;
हैं उदार गम्भीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
मोहनि सूरति है बलरामहि,
आनन्दित करती अभिरामहि;
लागै दर्शन की भीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
मंगलगान करैं गोपीजन,
प्रेम हिलोर उठै सब रसिकन;
नहिं भावै मन में धीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
राम-श्याम की सुन्दर जोरी,
देख कें प्रमुदित हों ब्रजगोरी;
रूप कौ लाग्यौ तीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
गौचारण में सेवा करते,
बलभैया बिन कृष्ण न टरते;
बहै प्रेम कौ नीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
मैया यशुमति दाऊ कौ टेरें,
रोहिणी मैया कृष्ण कौ हेरें;
प्रेम हिय कौ चीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
बिन दाऊ ब्रजलीला अधूरी,
दाऊ दयाल की कृपा जरूरी;
ब्रजभक्ति कौ नीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
ब्रज के राजा हैं बल्देव,
जयकार करैं सब देवी-देव;
राधा जैसो रंग-पीर, सबकौ सुखमय लगैं ।
कृष्ण-प्रेम-सेवा-वीर, गोरी छवि प्यारी लगै ॥

श्रीराधावतरणलीला का संक्षिप्त इतिहास

सूर्यवंशी महाराज दिलीप हुए, ये बड़े ही गौ भक्त थे । राधा रानी सूर्यवंशी थीं और राम जी भी सूर्य वंशी थे । इनकी परम्परा इस प्रकार है । महाराज दिलीप तक तो एक ही वंश आता है । दिलीप ने गौ भक्ति की क्योंकि उनको कामधेनु गाय का श्राप था । ये जब एक बार स्वर्ग में गये तो जल्दी-जल्दी में कामधेनु गाय को प्रणाम करना भूल गए थे, कामधेनु ने श्राप दे दिया कि तुम पुत्र की इच्छा से जा रहे हो, तुम्हें पुत्र नहीं होगा । ये श्राप उस समय दिलीप सुन नहीं सके थे क्योंकि आकाश में इन्द्र का ऐरावत हाथी क्रीड़ा कर रहा था । दीर्घकाल तक भी प्रयत्न करने पर उनको जब पुत्र की प्राप्ति नहीं हुई तब ये गुरु वशिष्ठ के पास गए । उन्होंने ध्यान करके बताया कि राजन् ! तुम्हें तो श्राप है, तुम्हें पुत्र कभी हो ही नहीं सकता क्योंकि यह कामधेनु का अमोघ श्राप है । वशिष्ठजी ने कहा – "तुम गौ सेवा करो, कामधेनु की पुत्री नन्दिनी हमारे पास है, वह भी कामधेनु है, एकमात्र वही इस श्राप को नष्ट कर सकती है", तब दिलीप ने अद्भुत गौ सेवा की । इनकी परीक्षा भी हुई, परीक्षा में सिंह ने आक्रमण किया और दिलीप ने अपना शरीर सिंह को दे दिया । सिंह बोला – "मैं पार्वती से नियुक्त सिंह हूँ, तुम इस साधारण गाय के लिए अपना शरीर क्यों नष्ट करते हो? जीवित रहोगे तो अनेक तरह की तपस्या आदि कर सकोगे ।"

आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानां कण्डूयनैर्दंशनिवारणैश्च ।
अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्याः सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत् ॥
स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्धधीरः ।
जलाभिलाषी जलमाददानां छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ॥ (श्रीरघुवंशमहाकाव्य - २/५)

दिलीप ने कहा – "यह शरीर जीवित रखने से कोई लाभ नहीं, अगर हम गाय को नहीं बचा सकते, इससे तो मर जाना अच्छा है । मनुष्य को उतनी ही देर जीना चाहिए, जब तक मशाल की तरह उस में प्रकाश हो । अगर प्रकाश न रहे तो जीने से कोई लाभ नहीं, उससे अच्छा है मर जाना ।" सिंह ने कहा – "तैयार हो जाओ मरने के लिए, दिलीप तैयार हो गए ।" सिंह आकाश में ऊपर उछला, ये सिर नीचे करके बैठ गए, हिले नहीं कि सिंह हमारे ऊपर प्रहार करेगा । तब तक क्या देखते हैं कि एक फूलों की माला आकाश से उनके ऊपर आकर पड़ गयी । उन्होंने सामने देखा तो गाय मुस्कुरा रही थी, बोली – "मैंने तुम्हारी परीक्षा ली थी, तुम इसमें उत्तीर्ण हो गये हो । जाओ मेरी माँ का श्राप मिट गया । अब तुम्हारे एक बड़ा प्रतापी पुत्र होगा, जिसका नाम रघु होगा ।" उस गौ सेवा को देख करके राजा दिलीप के लड़कों में से जो धर्म नाम के सबसे छोटे लड़के थे, उन्होंने कहा कि हमें राज्य नहीं चाहिए । हमें कुछ नहीं चाहिए । हम तो केवल गाय की सेवा करेंगे । उसी वंश में आगे चलकर अभयकर्ण हुए । शत्रुघ्न जी जब ब्रज में आये तो अभय कर्ण को साथ लाये क्योंकि ये भी बड़े गौ भक्त थे । शत्रुघ्नजी जानते थे कि यह भूमि गायों के लायक है ।

वाल्मीकिरामायण में एक प्रसंग आता है कि जब सीताजी वनवास के समय यमुनाजी को पार कर रही थीं, यमुनाजी को पार करते समय सीताजी ने यमुनाजी की वन्दना की, उन्होंने देख लिया कि यह यमुना ब्रज से आ रही हैं –

कालिन्दीमध्यमायाता सीता त्वेनामवन्दत । स्वस्ति देवि तरामि त्वां पारयेन्मे पतिर्व्रतम् ॥
यक्ष्ये त्वां गोसहस्रेण सुराघटशतेन च । स्वस्ति प्रत्यागते रामे पुरीमिक्ष्वाकुपालिताम् ॥

(श्रीवाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड ५५ /१९, २०)

सीताजी ने कहा – "हे माँ ! मैं तेरी हजारों गायों से सेवा करूँगी ।" सीताजी भी ब्रजभक्त थीं ।

जब अभयकर्णजी यहाँ आये तो बड़े प्रसन्न हुए और गौ सेवा करने लग गए । इसीलिए रघुवंश का यह एक अलग वंश आता है, इन्हीं के वंश में रशंग जी हुए, जिन्होंने बरसाना बसाया है और इन्हीं के वंश में राधा रानी का प्राकट्य हुआ ।

यह बरसाने का इतिहास है । रशंगजी के वंश में ही राजा वृषभानु और राधारानी हुई हैं; ये सूर्यवंशी थीं और श्रीकृष्ण चंद्रवंशी थे ।

महारानी कीर्ति जी धन्य हैं, जिनके यहाँ राधा रानी जन्मी । महारानी कीर्ति मानवी कन्या नहीं हैं, इनका अवतार हुआ है । किसी समय में अपने पूर्व जन्म से पहले ये तीन पितृश्वरों की दिव्य कन्यायें थीं । ये कथा शिवपुराण (पार्वती खण्ड, अध्याय-२) में आती है । जब ये श्वेतदीप गयीं तो वहाँ सनकादि आये । इन्होंने उठकर सम्मान नहीं किया तो उन्होंने श्राप दे दिया कि तुम मानवी बन जाओ । भगवान् ने कहा कि ये वरदान है, श्राप नहीं है । तुम्हें नित्य शक्ति को जन्म देने का अवसर मिलेगा । उन तीनों कन्याओं में से एक सीता जी की माँ बनी – 'सुनैना', एक पार्वती जी की माँ बनी – 'मैना' और एक राधिका जी की माँ बनी – 'कलावती' । ये कलावती के रूप में प्रकट हुईं, जो महाराज सुचन्द्र की स्त्री बनीं; दोनों ने बड़ा तप किया, उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी प्रकट हुए और उनसे वरदान माँगने को कहा । इस तरह महाराज सुचन्द्र जी को मोक्ष का वर प्राप्त हुआ । कलावतीजी बोलीं कि – ब्रह्मा, मैं तुमको श्राप दे दूँगी । तुमने मेरे रहते इनको मोक्ष क्यों दिया ? ब्रह्माजी घबरा गए क्योंकि ये महासती थीं । वे बोले कि ठीक है, ये कुछ दिन तक यहाँ ऊपर रहेंगे और फिर तुमको गोलोकेश्वरी की माँ बनने का सौभाग्य मिलेगा, उसके बाद तुम्हारे साथ ही धाम में जायेंगे; वे ही महाराज सुचन्द्र और वही कलावती फिर से यहाँ प्रगट हुए । कलावती, कीर्ति हुईं और इनकी कूँख से श्रीराधारानी भाद्र, शुक्ल, अष्टमी को प्रकट हुईं हैं ।

राधा जन्म बरसाने या रावल दोनों स्थानों पर गाया गया है । अतः बधाई में दोनों स्थलों का नाम है । जैसे – 'बरसाने ते दौड़ी नारी एक नन्द भवन में आई जू' ... । (नंददास जी) 'आज सखी मंगल में मंगल कीरत कन्या जाई' ..., 'आज बरसाने बजत बधाई'...(सूरदास), 'आज रावल में भीर भई'....(रामदास जी), 'जन्म बधाई कुँवर लली की'..., 'आज रावल में बजत बधाई' (सूरदासजी)

"जन्म लियो वृषभान गोप के बैठे सब सिंघद्वार री ॥ लग्न घड़ी बलि नक्षत्र शोध के गुरुजन कियो विचार री ॥
कंचन मणि आँगन आगे रही बोलत द्विजवर बेनरी ॥ कबहुँक सुध पावत सु भवन में पुत्र जनम के चेनरी ॥
इतने एक सखी आई धाय के जहाँ बैठे ग्वालरी ॥ वेगि पुकार कह्यो मुख आली प्रगटी सुता लघु वालरी ॥
तब हँसि तारी दे गुरुजन को देखे जनम विधानरी ॥ हमारे कोटि पुत्र की आसा पूरन करी वृषभानरी ॥
कर भाजन श्रृंगी जू गर्ग मुनि लग्न नक्षत्र बल शोधरी ॥ भए अचरज ग्रह देखि परस्पर कहत सबन प्रति बोधरी ॥
सुद भादो शुभ मास अष्टमी अनुराधा के शोधरी ॥ प्रीति योग बल बालव करन लग्न धनुष वर बोधरी ॥
प्रथम पहर दिन उदित दिवाकर सत्या सुखद सुजातरी ॥ नाम करन राधा रति रंजन रमा रसिक बहु भांतरी ॥
सुन वृषभान सुता जिन मानो ऐसी रमा रति लोलरी ॥ नाहिन ओर सुन्दर त्रिभुवन में श्री राधा समतोलरी ॥
नाहिन सची रमा गिरिजा रति रोम रोम प्रति ठानेरी ॥ नवनिधि चार पदारथ को फल आयो सकल ग्रहतानेरी ॥
जब ब्याहन शुभ योग होयगो शोभा कहत न आवेरी ॥ दस ओर चार लोक को नायक सोई सुता वर पावेरी ॥
तब हँस कह्यो दुर्वासा सबन सों सुनो श्रुति सकल गुवालरी ॥ मेरे हि चित आयो निश्चय नंद महर घर बालरी ॥
वृन्दावन रस रास रसिकमणि दम्पति सम्पति मानेरी ॥ संकेत स्थल विहरत दोऊ सोई सकल यह जानेरी ॥
युवती यूथ मध्य रसिक शिरोमनि वल्लभ कुल नंद लालरी ॥ यह जोरी जुग जुगत होयगी श्रीराधारमण गोपालरी ॥
शिव, विरंची जाकी जूठन न पावत सोई ग्रास परस्पर देतरी ॥ कुँजन-कुँजन क्रीडत अद्भुत अगम निगम रस लेतरी ॥
यह विध कह्यो द्विजराज जुगत सों ग्वाल मंडली जानेरी ॥ जय जय कार करत सुर लोकन बाजत तूर निशानरी ॥
घर घर तें सब गोपी निकसी गावत मंगल बालरी ॥ पिकबेनी मृगनेनी सुंदर चलत सुचाल मराल री ॥
जो रस नंद भवन में उमग्यो ताते दूनो होतरी ॥ हय गय धेनु ओर मणि दीनी बंदीजन द्विज बोहोत री ॥
वसन विचित्र सबन पहराये सब शिशु देखन जायरी ॥ मुख अवलोकि कहत चिरजीयो पुलकि- पुलकि सचु पायरी ॥

सुर मुनि नाग धरनी जंगम को आगम अति सुख देतरी ॥ शशि खंजन विद्रुम शुक के हरि इनको छिन बल लेतरी ॥
यह छवि निरख निरख सचु पावत पुनि डोरत तृन तोररी ॥ 'सूरदास' उर बसो निरंतर राधामाधव जोररी ॥"

यह अनोखी बधाई है, इसमें ९ योगेश्वर, गर्ग, दुर्वासा आदि राधाष्टमी पर आये हैं । नन्द भवन से दूना उत्सव श्रीजी की बधाई में हुआ है और श्रीजी के सौन्दर्य की तुलना में न लक्ष्मी, न पार्वती कोई भी महाशक्तियाँ नहीं है । इस बधाई में बरसाना व रावल नाम न देकर केवल इतना ही कहा कि वृषभानु भवन के सिंह द्वार पर सभी ऋषि राधा जन्म की प्रतीक्षा में बैठे हैं और जैसे ही सूचना पाते हैं, वे सब नामकरण आदि जातकर्म संस्कार में लग जाते हैं । वृषभानु महल ब्रज में तीन स्थान पर है बरहाना, बरसाना, रावल । जब गोकुल लीला होती है तब श्रीजी रावल रहती हैं, नन्द गाँव लीला में श्रीजी बरसाने विराजती हैं, जब नन्द बाबा बसई रहते हैं तब श्रीजी बरहाने विराजती हैं ।

सर्वज्ञ सर्वविद्या विशारद महर्षि गर्गाचार्य जी पावन यमुना तट पर शोभायमान वृषभानु पुरी रावल में आये । छत्र और दण्ड धारण करने से वे दूसरे इन्द्र और धर्मराज की तरह शोभायमान हो रहे थे । द्वितीय सूर्य की भाँति उनका तेज दसों दिशाओं को प्रकाशमान बना रहा था । पुस्तक एवं मेखला से सुसज्जित मुनि श्रेष्ठ गर्ग दूसरे ब्रह्मा की तरह मालूम पड़ते थे । शुभ्र वस्त्रों के धारण करने के कारण उनकी आभा भगवान् विष्णु की तरह प्रतीत होती थी । ऋषि कुलचूडामणि गर्ग जी को अपने द्वार पर आया देखकर वृषभानु जी ने बड़े सम्मान के साथ उनके चरणों की वन्दना की और करबद्ध होकर वे उनके सामने खड़े हो गए। अर्चना पद्धति के जानकार वृषभानु राय ने गर्ग जी को एक श्रेष्ठ आसन पर विराजित करके शास्त्रीय विधि से उन महामुनि की उपासना की, तत्पश्चात् उनकी प्रदक्षिणा करके श्री वृषभानु जी इस प्रकार बोले, "महापुरुषों का आगमन शान्ति का हेतु होता है क्योंकि इससे गृहस्थों को परम शान्ति प्राप्त होती है । मनुष्यों के हृदयस्थ अज्ञान अन्धकार का नाश संत महापुरुषों के द्वारा ही होता है न कि सूर्य द्वारा ।महाराज, आपके दर्शनों से हमारी सम्पूर्ण गोप जाति परम पावन हो गयी । पृथ्वी पर आप जैसे अमलात्मा महापुरुष अपनी चरण-रज से तीर्थों को भी पवित्र करते हैं । भगवन् ! मुझे एक परम मंगलमयी कन्या रत्न की प्राप्ति हुई है, जिसका नाम है राधिका । आप अच्छी प्रकार से मनोयोग पूर्वक चिंतन करके यह बताने की कृपा करें कि इसके अनुरूप सुलक्षणों से सम्पन्न वर कौन है, जिसके साथ इसका पाणिग्रहण संस्कार किया जाए क्योंकि आप सूर्य के सदृश त्रिलोकी में भ्रमण करते रहते हैं, आप सर्वज्ञ हैं अतः आपके द्वारा निर्दिष्ट सर्वगुणसम्पन्न वर को ही मैं इस मंगलमयी कन्या को अर्पण करूँगा" ।

देवर्षि नारद कहते हैं – "राजन्, वृषभानु जी की यह अभिलाषा सुनकर, गर्ग जी तुरन्त उन्हें निर्जन यमुना तट पर ले आये, वहाँ एक परम रमणीक स्थल था जो नील यमुना की निर्मल तरंगों की सुमधुर ध्वनि से सदा गुंजायमान रहता था । वहाँ गोप शिरोमणि वृषभानु जी को विराजमान करके सर्वज्ञ मुनि गर्ग ने इस प्रकार कहा – "वृषभानुजी, एक गोपनीय तथ्य है, इसे किसी को मत बताना । अनन्त ब्रह्मांड नायक, गोलोकाधिपति, परिपूर्णतम ब्रह्म, जिनसे श्रेष्ठ और कोई नहीं है, उन्हीं लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण का नन्द बाबा के गृह में प्राकट्य हुआ है" ।

श्री वृषभानु राय जी बोले – "महर्षे, नन्द जी परम धन्य और अवर्णनीय सौभाग्य से युक्त हैं । अब आप भगवान् श्रीकृष्ण के अवतरण का सम्पूर्ण रहस्य मुझे बताने की कृपा करें ।"

महर्षि गर्ग बोले – "ब्रह्मा जी की प्रार्थनानुसार भू भार हरण करने तथा कंस आदि नराधमों का विनाश करने हेतु गोलोक पति भगवान गोविंद इस धरा पर अवतरित हुए हैं । उन्हीं नन्द नंदन प्रभु की परम प्रेयसी, गोलोकेश्वरी श्रीराधा रानी का ही तुम्हारे सदन में कन्या रूप से प्राकट्य हुआ है । तुम्हें भगवान् की आह्लादिनी शक्ति श्रीजी की अतुलनीय महिमा का ज्ञान नहीं है" ।

श्रीनारद जी ने कहा – "उस समय गोपेश्वर वृषभानु के हृदय में आनन्द का सिंधु उमड़ पड़ा और वे रोमांचित हो उठे । उन्होंने कीर्ति रानी को बुलाकर इस विषय में गहन विचार विमर्श किया । तदनन्तर राधा-माधव की अतुलनीय महिमा को जानकर गोपेन्द्र वृषभानु आनन्द अश्रु प्रवाहित करते हुए पुनः ऋषि वर गर्ग जी से बोले ।" वृषभानु राय ने

कहा – "महामुने ! उन्हीं परमेश्वर श्रीकृष्ण को मैं अपनी इस पद्माक्षी बालिका को समर्पित करूँगा । आपने मुझे विलक्षण मार्गदर्शन किया है । अतः आप के ही निर्देशानुसार इस कन्या का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होवे ।" गर्ग मुनि बोले – "गोपवर ! श्रीराधा और उनके प्राणनाथ माधव का शुभ विवाह संस्कार मैं नहीं करूँगा । पावन यमुना तटवर्ती भांडीर वन में इनका शुभ विवाह सम्पन्न होगा । वृन्दावन के समीपवर्ती किसी निर्जन स्थान में सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्मा के द्वारा इनका विवाह संस्कार सम्पन्न होगा । हे गोपेश्वर ! तुम इन श्रीराधा को मधुराधिपति श्यामसुन्दर की प्राणवल्लभा समझो । इस जगत में सम्राटों के अधिपति तुम हो एवं समस्त लोकों का अधिपति गोलोक धाम है । तुम अपनी सम्पूर्ण गोप जाति के सहित गो लोक धाम से ही इस वसुन्धरा पर आये हो, उसी प्रकार समस्त गोपांगनाएँ भी श्रीजी की आज्ञानुसार गो लोक से अवतरित हुई हैं । बड़े बड़े यज्ञ संपादन करने पर देवताओं को भी असंख्य जन्मों तक जिनका दर्शन दुर्लभ है, वे ही गोलोकेश्वरी श्रीकृष्ण वल्लभा राधा रानी तुम्हारे भवन के प्रांगण में गुप्त रूप से विराजित हैं तथा असंख्य गोप और गोपिकाएँ उनका प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त करते हैं ।" श्री नारद जी ने कहा – "हे राजन् ! श्रीराधा-माधव की यह अतुलनीय महिमा श्रवण कर वृषभानु राय और रानी कीर्ति अत्यन्त आश्चर्यचकित और परमानंद से रोमांचित होकर गर्गजी से इस प्रकार कहने लगे "द्विजवर, राधा शब्द की तात्विक व्याख्या बताने की कृपा करें । मुनिवर ! इस पृथ्वी पर मन के संशय को निर्मूल करने वाला आपके सदृश कोई नहीं है" । गर्गाचार्य जी ने कहा – एक बार की बात है, मैं गंधमादन गिरि पर गया था । शिष्यगण भी मेरे साथ थे । वहीं श्री नारायण के मुखारविन्द से मैंने सामवेद का यह सारांश श्रवण किया । 'र' कार से रमा का, 'आ' कार से गोपाङ्गनाओं का, 'ध' कार से धरा का तथा 'आ' कार से विरजा नदी का ग्रहण होता है । लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण का सर्वोत्तम तेज चार रूपों में विभाजित हो गया । लीला, भू, श्री, और विरजा, ये ४ श्रीकृष्ण पत्नियाँ श्रीराधा रानी के मंगलमय विग्रह में विलीन हो गईं । इसलिए मनीषी जन श्रीराधिका को परिपूर्णतम कहते हैं । गोपराज ! जो मानव राधा कृष्ण के इस नाम का सतत् कीर्तन करते हैं, उनके लिए चारों पुरुषार्थ तो क्या अपितु प्रत्यक्ष भगवान् श्रीकृष्ण का साक्षात्कार भी सुगम हो जाता है ।"

श्रीनारदजी ने कहा – "राजन् ! उस समय सपत्नीक वृषभानुजी परम आश्चर्यचकित हो गये । श्रीराधा गोविन्द के अतुलनीय वैभव को जानकर वे परमानन्द की साकार प्रतिमा बन गए । तदनन्तर श्री वृषभानु राय ने ऋषि कुल चूडामणि श्री गर्गाचार्य की अर्चना की । तत्पश्चात् वे तत्वज्ञ एवं त्रिकालज्ञ मुनीश्वर गर्गजी अपने गन्तव्य को पधार गये ।"

श्रीराधिका-जन्मोत्सव (बधाई-गायन)

राधा जनम भयौ बरसाने, आय नन्द यशोदा धाय ।

सुन सुन फूलीं जसुदा माई,
लिये गोद में कुँवर कन्हाई,
गईं जहाँ बज रही बधाई,
नाचैं गावैं गीत मनोहर, आनन्द नहीं समाय ।
ब्रज गोपी महलन में आवैं,
कन्या लै के गोद खिलावैं,
जसुमति कीरति हँसैं हँसावैं,
या बेटी के ऊपर लाखों बेटा हू नहिं भाय ।
कान्हा को राधा पै वारैं,
तन मन प्राण सबै न्यौछारैं,
देवन को अंचरा पैसारें,
देख देख जसुदा की करनी कीरतिहू मुसकाय ।
नंद वृषभानु सभा में ठाढ़े,
कौंरी भर भर मिलै जु गाढ़े,
पौरी में बज रहे नगाड़े,
खुर और सींग मढ़ी सोने ते ऐसी दीनी गाय ॥

- **पूज्यश्री बाबा महाराज कृत (रसिया) बधाई**

आनन्द झूम रह्यो वृषभानु भवन में, राधा जनमी आय ॥

सब लोकन में बजी बधाई,
भादों सुदी अष्टमी आई,
पीरी फाट रही सुखदाई,
दुंदुभि नभ में देव बजावैं, फूलन कूँ बरसाय ।
ध्वजा पताका फहरन लागे,
बाजे बहुत बजावन लागे,
घर घर धूम मचावन लागे,
बरसाने की गली गलिन में मंगल ही रह्यो छाय ।
दूध दही के मांट ढुरावैं,
ऐसी गाढ़ी कीच मचावैं,
कन्या को आसीस सुनावैं,
बहुतै भाग हमारे भैया या लाली को पाय ।
सजी धजी गोपी जन आवैं,
उमा रमा के भाग लजावैं,
श्री राधा लो लै दुलरावैं,
जाकौ ध्यान धरैं त्रिभुवन पति मोहनहू तरसाय ।

- पूज्यश्री बाबा महाराज कृत (रसिया) बधाई

श्रीमहासखी 'ललितावतरण'

श्रीललिताजी का जन्म भाद्रपद, शुक्ल,षष्ठी को हुआ; ये श्रीजी के सदा संग रहने वाली प्रमुख सखी हैं ।

रसिया-तर्ज – श्रीराधा प्यारी लाड़िली रानी कीरति की सुकुमार ।

श्रीललिता प्यारी सहचरी, रानी राधे की रिझवार ।
हैं प्यारीजू की महासखी;
बन सहभागिनि कर सेवा, राधे जू प्राणाधार ।
दक्ष-चतुर निपुण सेवा में;
होते हैं सन्तुष्ट सदा, राधामाधव सरकार ।
हैं श्रीजी के मन की करतीं;
माध्यम बनकर लीला की, सरसाती हैं रससार ।
श्रीसेवा हित जन्मीं पहले;
माँ सारदी अशोक पिताजी, हुए धन्य दातार ।
ऊँचौ गाँव भयौ मंगलमय;

ललिता-लीला है अति रसमय, छूटै सब संसार ।
इनकी कृपा मिलैं श्रीराधा;
राधा रस बिन लगै है नीरस, जीवन सब बेकार ।
ललिता-भक्ति से युगल रस;
ललिता की ही शरण हैं लेते, सदा युगल सरकार ।
लीला ललित हो ललिताजी से;
हे ललिते ! अब करहु कृपा, राधा लीला साकार ।
महिमा ललिताश्री की अद्‌भुत;
पाऊँ करुण कोर श्रीराधे, करो ललित-उद्धार ॥

.....

तर्ज – हम जिन्दगी लुटाने आये हैं तेरे दर पै ..... ।

प्रगटीं राधा बरसाने, प्रेम-दया दिखलाने ।
भाव सरस बरसावैं, हिय आनन्द उठाने ॥
कर अनुकम्पा में आदेश, दैं सहचरियन कूँ सन्देश;
लेतीं श्री-आज्ञा अवतार, करतीं मंगलमय उपदेश;
अति अनुकूल समय भयौ है, जीवन सफल बनाने ।
श्रीराधा की प्रेम-तरंग, भावुकजन से जानैं;
रूप बदल के श्रीपरिकर, आवै जग समझानै;
सरल-सरस भाषा में, भाव-श्रीभक्ति जनाने । प्रगटीं .....
हुई कलि में कृपा विशेष, कठिन सुलभ हो जावै;
नाम-धाम-जन महिमा कौ, सत्संगी समझावैं;
दुर्लभ मानव-जीवन कौ, बिगड़ा हुआ बनाने । प्रगटीं .....
अद्‌भुत है श्रीराधा नाम, अनुपम श्रीजी कौ गुणगान;
अपराध-महद् सब कटते, कर धोखे हू राधा-गान;
राधा नाम की महिमा, मन-मति में समझाने । प्रगटीं.....

प्रगट होवै धाम-श्रीनाम, रज प्रभाव है अति अभिराम;
पगे हैं रज-कण प्रेम सरस, नित लीला श्रीश्यामाश्याम;
राधारज की करुणा, ब्रजरसिकन पहिचाने । प्रगटीं .....
गोपीजन ने पायौ प्रेम, रज कौ सिर पै धारै;
ब्रजरज से मिलता ब्रजरस, संतजनन कौ तारै;
रज-रस काजै छोड़ो सब, नियम-धरम मनमाने । प्रगटीं .....
सत्तारिणी हैं परम निधि, बरसाने वारी राधा;
त्याग सहारै लै शरणागति, जननी प्रेम अगाधा;
महारास-देवी दर पै, आये हैं रस पाने । प्रगटीं राधा .....
होते आह्लादित कृष्ण जहाँ, नित दरसन हित आते;
श्रीसखियन-चरणन में गिरते, प्रेम-याचना करते;
श्रीप्रिया-पवन कौ पाकर, रोम-रोम हरषाने । प्रगटीं राधा .....
परम प्रेममय श्रीप्राकट्य, प्रेमिन-भावुक भावै;
रसिकजनन कौ उत्सव, नीरस जान न पावै;
राधा-जन्म की जय-जयकार, आये हैं हम लगाने ॥ प्रगटीं...

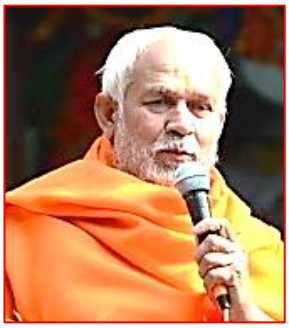

बाबाश्री की ब्रज-गाथा

श्रीराधाकान्त भैयाजी द्वारा कथित 'श्रीबाबामहाराज' के सम्बन्ध में संक्षिप्त भावोद्गार (७ मई, २०२५)

प्रश्न – भइयाजी ! आपका जन्म कब हुआ, बाबाश्री ब्रज में कब आये हैं ?

भैयाजी – बाबा महाराज यहाँ (मानमंदिर पर) सन् १९५३ में आये थे और मेरा जन्म लगभग सन् १९५६ या ५७ का है । बाबा के सामने ही मेरा जन्म हुआ है । बाबा जब मान मन्दिर में रहते थे, उस समय हम बहुत छोटे बच्चे ही थे और खेला करते थे । उस अवस्था में हमने बाबा के दर्शन किये थे ।

प्रश्न – श्रीबाबामहाराज से आपकी पहली भेंट कब हुई थी ?

भैयाजी – मेरी स्मृति के अनुसार बाबा महाराज मानपुर गाँव में कीर्तन करने के लिए आया करते थे । सबसे पहले मेरे पिताजी का परिचय 'बाबामहाराज' से हुआ था । बाबा ने उनसे कहा था कि आपके गाँव में कहीं भी कीर्तन नहीं होता है, यहाँ कीर्तन होना चाहिए । बाबा ने मेरे पिताजी को कीर्तन के लिए प्रेरित किया और आगे चलकर मानपुर गाँव के सभी लोगों से कीर्तन करने के लिए कहा । मानपुर में एक कुआँ है, जिसे नीम वाला कुआँ कहते हैं, जहाँ संजय का घर है, वहाँ नीम के पेड़ के नीचे बाबा महाराज ने कीर्तन प्रारम्भ किया । वहाँ रात को सभी लोग एकत्रित हुआ करते थे । उस कीर्तन में हम भी जाया करते थे । उस समय मैं लगभग सात-आठ वर्ष का था । इसी आयु में मेरे पिताजी मुझे मान मन्दिर में बाबा के पास पढ़ने के लिए भेजा करते थे । मानपुर में कीर्तन मेरे सामने शुरू हुआ था और मान मन्दिर में भी कीर्तन मेरे सामने ही प्रारम्भ हुआ था । बाबा महाराज को कीर्तन से बहुत प्रेम था । बाबा महाराज का यही भाव रहता था कि जैसे कृष्णलीला काल में गोपियाँ हर समय कृष्ण गुणगान करती रहती थीं, उसी प्रकार फिर से ब्रज का वही स्वरूप बन जाए और उन्हें इस बात का दुःख था कि मेरे समय में अभी ब्रज में कीर्तन नहीं हो रहा है । बाबा ने मानपुर में कुएँ के पास नीम के पेड़ के नीचे बड़ी धूमधाम से कीर्तन प्रारम्भ करवाया । वहाँ शाम के समय प्रतिदिन गाँव के पचासों लोग कीर्तन करने के लिए एकत्रित हुआ करते थे । लगभग चालीस-पचास लोग एक चबूतरे पर बैठा करते थे । काफी दिनों तक वहाँ कीर्तन चला । उसके बाद बाबा ने मानपुर की एक चौपाल में कीर्तन शुरू किया । वह पुरानी चौपाल थी, जहाँ अब नई चौपाल बन गयी है । उस चौपाल में गाँव के लोग बाबा के साथ कीर्तन किया करते थे । जिस समय गाँव के लोग चौपाल में कीर्तन करते थे, तभी मान मन्दिर में भी कीर्तन शुरू हो गया था । उसके बाद बाबा महाराज ने हमारे घर में कीर्तन शुरू किया । धीरे-धीरे गाँव के लोगों में आपसी फूट सी पड़ने लगी थी । वे लोग सोचने लगे थे कि बाबा इन्हीं दो घर वालों के प्रति पक्षपात करते हैं, एक तो मेरे पिताजी का और दूसरे पण्डितजी के पिताजी का । प्रायः सभी की ऐसी ही धारणा बन गयी थी । आगे चलकर बाबा महाराज ने गह्वर वन में जो उनकी पुरानी कुटी थी, वहाँ कीर्तन प्रारम्भ किया । पहले बाबा कुटी में कीर्तन करते थे और उसके बाद मान मन्दिर में करते थे । उस समय मानपुर का कीर्तन बन्द हो गया था । जब मानपुर में कीर्तन होता था तो उस कीर्तन का आगे चलकर विरोध होने लगा, लड़ाई भी हुई । उस लड़ाई के कारण आवागमन बन्द हो गया । लड़ाई हमारे घर वालों से और बाबा महाराज से हो गयी । हमारे घर से, हमारी मौसी के घर से, विशेषकर रामवती मौसी के घर से लड़ाई शुरू हुई । इनकी जगह को गाँव वालों ने घेर लिया था । उसी को लेकर विवाद शुरू हुआ । उस विवाद के कारण भयंकर जंग हुई । इतनी भयंकर जंग हुई कि ऐसा लगा कि जैसे महाभारत का सा युद्ध हुआ । इसी कारण से फिर बाबा ने अपने अनुयायियों को शस्त्र संचालन करना सिखाया । उस

समय हम तो छोटे थे । हमारे पिताजी को, मौसाजी को बाबा ने आत्मरक्षा के लिए लाठी चलाना सिखाया । जिस प्रकार द्रोणाचार्यजी ने कौरवों और पाण्डवों को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्रदान की थी, उसी प्रकार श्रीबाबा महाराज ने ऐसी फ़ौज तैयार की थी कि उस फ़ौज का केवल एक आदमी ही पूरे गाँव से लड़ सकता था । बाबा महाराज प्रत्येक कला में दक्ष थे, ऐसा नहीं कि केवल किसी एक विषय के विशेषज्ञ हों, चाहे कोई सांसारिक विषय हो, चाहे आध्यात्मिक विषय हो, सभी में बाबा पारंगत थे ।

प्रश्न – बाबा ने लाठी के अतिरिक्त अन्य कौन से शस्त्र चलाने सिखाये ?

उत्तर – आत्मरक्षा के लिए श्रीबाबा ने लाठी, बल्लम, चाक़ू, तलवार, फरसा आदि सभी प्रकार के शस्त्र चलाना अपने अनुयायियों को सिखाया । गाँव में भयंकर लड़ाई हुई, एक तरफ सारा गाँव था, दूसरी ओर मेरे पिताजी और मौसाजी – ये दो आदमी ही थे किन्तु बाबा की शस्त्र चलाने की शिक्षा के कारण ही सारा गाँव मिलकर भी इन दो व्यक्तियों का बाल भी बाँका नहीं कर सका । गाँव वालों का हमारे पिताजी और मौसाजी से इतना विरोध था कि उस विरोध के कारण फिर उन्होंने बाबा महाराज से भी विरोध कर लिया । हमारे पिताजी को जेल तक जाना पड़ा और विरोध इतना बढ़ गया था कि मानपुर, चिकसौली, बरसाना से कोई जमानत देने वाला नहीं मिला कि जमानत के आधार पर जेल से छुड़ा लें । हमारी ननिहाल तालवन (तारसी) में रिश्तेदारी थी, उन्होंने जमानत दी, पिताजी जेल से मुक्त हुए, फिर भी गाँव में भारी विरोध के कारण उनका जेल से मानपुर में आना मुश्किल हो गया । बाबा ने पिताजी से कहा कि तुम लाठी लेकर दोहनी कुण्ड की ओर से मानपुर में प्रवेश करो । राजपूतानियाँ (राजपूत स्त्रियाँ) बार-बार पुत्र को जन्म नहीं देती हैं । क्षत्रिय का जन्म तो केवल एक बार और मरने के लिए ही होता है । बाबा महाराज की प्रेरणा से पिताजी साहस करके दिन-दहाड़े मानपुर में आये और कोई भी उनके विरुद्ध कुछ नहीं बोल सका । ये तीन लोग थे और निर्भय होकर इन्होंने मानपुर में प्रवेश किया, कोई भी इन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सका । इसके बाद फिर बहुत संघर्ष हुआ । इसके बाद बाबा मानपुर में कथा करने के लिए जाने लगे । हमारे घर में बाबा ने छः महीने तक कथा कही थी । भागवत के वेणुगीत के श्लोक - बर्हापीडं नटवरवपुः ..... की बाबा ने छः महीने तक विस्तृत व्याख्या की थी । उस समय विरोधी लोग हमारे घर पर पत्थर फेंकने लगे थे । इसके बाद बहुत दिनों तक अत्यधिक संघर्ष चला । इस संघर्ष के कारण बाबा को हमारे घर में कथा करने के लिए जाना बन्द करना पड़ गया था । उस समय मैं ही अपने घर में कथा सुनाया करता था, तब तक मैं बड़ा हो गया था और सारी रात जगता रहता था । जबकि मैं तो घर में रहता नहीं था, मैं तो बाबा के पास मान मन्दिर में ही रहता था किन्तु स्वयं बाबा महाराज ने ही मुझे प्रेरित करके घर भेजा और वहाँ सारी रात जगने के लिए कहा था क्योंकि विरोधी पक्ष की ओर से इतना अधिक खतरा था कि वे रात को कुछ भी अनिष्टकारी उपद्रव चोरी-डकैती आदि कर सकते थे । वह कोई सामान्य लड़ाई नहीं थी, बहुत ही भयंकर संघर्ष था । खनन माफियाओं के विरुद्ध जो संघर्ष किया गया, मानपुर गाँव के विरोधियों के साथ संघर्ष तो उससे भी अधिक बड़ा था । राधा रस मन्दिर को भी चिकसौली, मानपुर और बरसाना वालों के द्वारा बहुत अधिक उपेक्षित कर दिया गया था और यही स्थिति मानपुर में हमारे घर की थी । इस तरह देखा जाए तो दुर्दान्त विरोध के कारण पण्डितजी के घर रस मन्दिर की और मानपुर में हम लोगों के घर की बहुत ही भयंकर दशा थी । इन गाँवों में एक भी व्यक्ति हम लोगों के पक्ष में बोलने वाला नहीं था । उस विकट स्थिति में मानमन्दिर में श्रीबाबा महाराज के नेतृत्त्व में कीर्तन होता था । उस समय चालीस लड़के मान मन्दिर में रहते थे । सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फ़ौज की तरह बाबा ने इन लड़कों की फ़ौज तैयार कर दी थी । वह फ़ौज ऐसी थी कि हर समय मरने-मिटने के लिए तैयार रहती थी । कोई भी गह्वर वन में यदि ऊँट-बकरी आदि पशुओं को चराने के लिए आता तो ये लड़के उसको दण्डित किया करते थे । मानमन्दिर में बाबा महाराज के नेतृत्त्व में चालीस लड़कों का संगठन था, उसमें मैं भी था । हम लोगों के विरुद्ध भी काफी संघर्ष हुआ । पुलिस थाने में हम लोगों के विरोध में बहुत सी झूठी शिकायतें दर्ज करायी गयीं । इन चालीस लड़कों में इतना उत्साह था कि ब्रज की रक्षा के लिए ये ब्लेड से हाथ

काटकर अपने खून से हस्ताक्षर किया करते थे । खून से हस्ताक्षर करने का यही उद्देश्य था कि हम लोग गह्वर वन की रक्षा के लिए मर-मिटेंगे । एक कागज पर ये लोग खून के हस्ताक्षर करके उस कागज़ को अपने पास रखते थे । यह उनके अत्यधिक जोश का प्रतीक था । गह्वर वन में अपनी कुटी के पीछे बाबा महाराज ने एक अखाड़ा बनवाया । उसमें कम से कम तीन घंटे तक कुश्ती हुआ करती थी । चिकसौली गाँव का एक बदमाश था, वह बनैठी घुमाता था, उनसे वह वार करता था । एक बार वह हमारे अखाड़े में हम लोगों से लड़ने के लिए आया तो हम लोगों ने उसकी खूब पिटाई की । हम चालीस लोगों की ऐसी सैन्य शक्ति थी, जो किसी भी असामाजिक खल प्रकृति के लोगों द्वारा उद्दण्डता करने पर उनके ऊपर प्रहार कर देती थी । इस तरह बाबा महाराज ने अपने अनुयायी सभी बच्चों को इतना पुष्ट बना दिया था कि वे बाबा के आदेश का पालन करने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते थे । बाबा ने सभी बालकों को निडर बना दिया था । गह्वर वन में श्मशान भूमि थी । उस समय गाँव में सड़क नहीं थी, कच्चा रास्ता था । श्मशान से होकर जाने वाले उस रास्ते से रात तो क्या दिन के समय भी कोई नहीं जाता था । यहाँ गाँवों के लोग इतना भय मानते थे परन्तु हम लोगों को सशक्त बनाने के लिए उस श्मशान भूमि में जब कोई शव जल रहा होता तो बाबा महाराज चप्पल रखवा देते थे और फिर आधी रात के समय किसी एक बालक से कहते थे कि अकेले जाकर वहाँ से उस चप्पल को ले आओ । बालकों को निर्भय-साहसी बनाने के लिए बाबा महाराज ऐसा किया करते थे । अनेकों विरोधी लोग मान मन्दिर के सदस्यों को प्रताड़ित करने के उद्देश्य से आये किन्तु यहाँ का कोई भी व्यक्ति उनके आगे नतमस्तक नहीं हुआ । धीरे-धीरे संघर्ष बहुत बढ़ता चला गया । एक बार कोई त्योहार था । चालीस लड़कों में मुझे छोड़कर बाकी सभी बालक नीचे थे । मान मन्दिर में उस समय केवल बाबा महाराज थे और मैं था । उस समय बरसाना के २५-३० विरोधी लोग मान मन्दिर पहुँच गये । नीचे स्थित बालकों को जब पता चला कि ये विरोधी लोग बाबा महाराज को क्षति पहुँचाने के उद्देश्य से ऊपर मान मन्दिर गये हैं तो वे सभी बालक दौड़कर मान मन्दिर पहुँचे । उनके दौड़ने की आवाज सुनकर बरसाना के वे विरोधी लोग भयभीत होकर तुरन्त ही भाग गये और इतनी जोर से भागे कि ये बालक उन्हें चिल्लाते – 'रुक जा, रुक जा' परन्तु उनकी हिम्मत नहीं हुई जरा देर भी रुकने की । ये लोग बाबा महाराज को नीचा दिखाने के उद्देश्य से, उनसे बहस करने, उन्हें कठोर बातें सुनाने के लिए मान मन्दिर में आये थे किन्तु श्रीजी-ठाकुर जी ने उनके कुत्सित उद्देश्य को पूरा नहीं होने दिया और उन्हें यहाँ से भागना पड़ा ।

प्रश्न – उन दिनों बाबा महाराज का मान मन्दिर में रहने वालों के प्रति अनुशासन कैसा रहता था ?

भइयाजी – अनुशासन तो बड़ा ही भयंकर होता था । जिस समय मान मन्दिर में रात को कीर्तन होता था, उस कीर्तन में किसी लड़के के द्वारा जरा सी भी लापरवाही होने पर चालीस लड़कों के द्वारा उस एक लड़के को पाँच थप्पड़ लगाने का आदेश श्रीबाबा महाराज के द्वारा दिया जाता था । अब एक लड़के को चालीस लड़कों के द्वारा थप्पड़ लगाये जाएँ तो सोचिये क्या दशा होगी ? एक बार किसी गलती पर श्रीबाबा ने मुझे इतनी बुरी तरह से पीटा था कि मेरी छाती पर निशान पड़ गया था, लाल रक्त जम गया था और वह आज भी जमा है । उस समय बाबा महाराज के शरीर में इतनी शक्ति थी कि यदि वे किसी को एक भी थप्पड़ लगा देते तो वह नीचे गिरे बिना नहीं रह सकता था । बाबा महाराज स्वयं हम लोगों को आपस में कुश्ती लड़ाते थे और स्वयं भी हम लोगों के साथ कुश्ती लड़ते थे । बाबा ने हमारे और पण्डित जी के परिवार वालों के सहयोग और उनकी रक्षा के लिए इतना अधिक परिश्रम किया जैसे भगवान् श्रीकृष्ण ने पाण्डवों की सहायता के लिए किया था । उसे याद करके मुझे लगता है कि श्रीबाबा महाराज का हम दोनों परिवारों के प्रति अपनी सन्तान के समान कितना अधिक प्रेम था । जब बाबा महाराज ने कठोरतापूर्वक मुझे दण्डित किया था तो मुझे तनिक भी बुरा नहीं लगा । एक बार तो उन्होंने मुझे मान मन्दिर से निष्कासित करते हुए कहा कि 'निकल जाओ यहाँ से' । उस समय मैं छोटा ही था, जब मैं अपने घर गया और यह बात अपने पिताजी को बतायी तो उन्होंने भी मुझसे कह दिया कि जाओ, मान मन्दिर में ही जाओ, इस घर में तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं है । मेरे पिताजी बाबा महाराज के प्रति अगाध

श्रद्धा रखते थे । मानपुर में कुएँ के पास एक पागल व्यक्ति रहता था, जब बाबा ने मेरी पिटाई की तो मैंने अपने पिताजी से यही कहा कि उस पागल आदमी ने ही मुझे मारा है ।

प्रश्न – आपने अपने घर में यह बताया कि मुझे पागल आदमी ने मारा है, ऐसा कहने के पीछे आपका क्या भाव था ?

भइयाजी – बाबा के प्रति मेरे हृदय में इतनी अधिक श्रद्धा हो गयी थी कि फिर मैं बाबा को एक सन्त नहीं बल्कि भगवान् मानने लगा था । केवल मैं ही नहीं अपितु जो गाँव के चालीस बालक मान मन्दिर में रहते थे, उनकी भी बाबा के प्रति श्रद्धा चरम बिन्दु तक थी । ये सभी बालक गलती किये जाने पर बाबा के द्वारा पिटते थे किन्तु कोई भी बुरा नहीं मानता था, कोई भी बाबा महाराज के प्रति दोष-दृष्टि नहीं करता था । जब ये बालक धीरे-धीरे बड़े हो गये तो थोड़ी अहंता जागृत हो गयी और इनके घर वाले भी नहीं चाहते थे कि हमारे बालक मान मन्दिर में एक साधु के पास रहें तो उन्होंने इन बालकों के विवाह करने का प्रयास किया और इस तरह अधिकांश बालक विवाहित जीवन में प्रवेश करके अपने घर चले गये । चिकसौली गाँव का एक बालक था, उसको उसके घर वालों ने कुएँ में उल्टा लटका दिया और धमकाया कि यदि बाबा के पास मान मन्दिर में रहेगा तो तुझे जान से मार देंगे किन्तु उसने भी घर वालों से स्पष्ट कह दिया कि भले ही तुम लोग मुझे मार दो किन्तु मैं बाबा को कभी नहीं छोड़ूँगा । स्थानीय गाँव वालों ने हम लोगों के, पण्डितजी और ज्ञानीजी के विरुद्ध भी मुकदमा दर्ज कराया ।

एक बार श्रीबाबामहाराज हमारे घर से कथा कहकर मानमन्दिर आ रहे थे तो किसी ने उनके ऊपर पत्थर से आघात किया परन्तु वह पत्थर बाबा को न लगकर ज्ञानी जी को लगा, इससे उनके सिर में गम्भीर चोट आई । उस समय वे हाई स्कूल की परीक्षा दे रहे थे । ज्ञानी जी के सिर में गम्भीर चोट लगने के कारण फिर बाबा महाराज ने मानपुर में कथा-कीर्तन करने पर विराम लगा दिया । इस घटना के बाद फिर बाबा महाराज ने मान मन्दिर में कीर्तन करना आरम्भ कर दिया और गाँव के लोग उसी कीर्तन में सम्मिलित होने लगे ।

गाँव वालों से जो संघर्ष चल रहा था, उसका प्रारम्भ एक भयावह घटना से हुआ था । मानपुर में मेरी मौसी का छोटा- सा कच्चा घर था । उसके पीछे जो जगह थी, विरोधी पक्ष के लोगों ने वहाँ से उनके घर का दरवाजा बन्द कर दिया, काँटों की बाड़ लगा दी ताकि ये लोग घर से बाहर ही न निकल सकें । इसका कारण यह था कि हमारा और मौसाजी के परिवार का गाँव में व्यापक प्रभाव था । हमारे कुटुम्ब वालों को विरोधी पक्ष वाले हवेली वाले कहते थे । जब इन लोगों ने मौसाजी के घर के दरवाजे पर कँटीली बाड़ लगाकर उनका द्वार ही अवरुद्ध कर दिया तो स्वयं श्रीबाबामहाराज उनकी सहायता के लिए मानमन्दिर से उतरकर मानपुर में गये । उस समय बाबा बहुत बढ़िया वंशी वादन करते थे । मानपुर में प्रवेश करने के पहले बाबा महाराज ने वंशी बजायी । बाबा के अनुयायी गाँव के एक बालक ने उनकी वंशी की ध्वनि को सुन लिया । वह जानता था कि बाबा जब कहीं जाते हैं तो वंशी बजाते हैं । उसने सोचा कि बाबा मानपुर में विरोधियों के मध्य गये हैं तो कोई उन पर प्राणघातक हमला न कर दे, इस आशंका से वह बाबा महाराज के सहयोग के लिए भागकर मानपुर में आया । बाबा महाराज मानपुर में पहुँचे और उन्होंने मौसाजी के घर के द्वार से काँटों की बाड़ स्वयं अपने हाथों से हटाई । विरोधी पक्ष के बहुत से लोग वहाँ खड़े हुए यह सब दृश्य देख रहे थे । कोई बाबा से कुछ नहीं बोला । वे काँटे हटाकर बाबा मौसाजी के घर के भीतर गये । उस समय वह बालक भी बाबा के पास पहुँच गया । बाबा महाराज ने उससे पूछा कि तू यहाँ क्यों आया है ? बालक ने कहा कि महाराज ! मैं तो आपके पीछे हूँ । आपके लिए मैं मरने-मिटने के लिए तैयार हूँ । यदि आपके प्राण गये तो मैं भी आपके लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दूँगा । उस समय बाबा ने उस बालक को गीता का यह श्लोक सुनाया –

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थ धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ (श्रीगीताजी – १८/७८)

बाबा ने उस बालक को मौसी के घर में बैठाकर इस श्लोक का १०८ बार पाठ करने को कहा । इसके बाद बाबा महाराज ने उस बालक से कहा कि अब हम यहाँ से चलते हैं । बाबा महाराज उस बालक के साथ मानपुर गाँव से होकर

निकले तो उस समय शत्रु पक्ष के बहुत से लोग बाबा पर प्रहार करने के लिए अपने हाथों में लाठी, बल्लम आदि हथियार लेकर अपने दरवाजे पर खड़े थे परन्तु बाबा के सबके सामने निर्भय होकर जाने पर किसी व्यक्ति के अन्दर भी बाबा को तनिक सी भी क्षति पहुँचाने का साहस नहीं हुआ और बाबा उस बालक को लेकर सबके सामने ही निडरतापूर्वक मान मन्दिर चले गये । इन्हीं लोगों के साथ फिर बहुत बड़ा संघर्ष चला, दीर्घकाल तक मुकदमा भी चला । इस प्रबल संघर्ष पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से श्रीबाबा महाराज ने मानपुर में हमारे घर में अखण्ड कीर्तन प्रारम्भ करवाया । वह अखण्ड कीर्तन छः महीने तक निरन्तर चलता रहा । बाबा महाराज की प्रेरणा से सतत कीर्तन भी होता रहता था और रात्रि जागरण भी होता रहता था । संघर्ष इतना अधिक बढ़ चुका था कि सुरक्षा के लिए प्रशासन के द्वारा घर में पुलिस का भी प्रबन्ध करना पड़ा था । लगभग दो महीने तक पुलिस के सिपाही हमारे घर में सुरक्षा के लिए तैनात रहे ।

बाबामहाराज अपनी धुन के इतने पक्के थे कि जो काम आरम्भ कर देते तो उसे निष्ठा के साथ पूरा करते थे । अखाड़े में दो-तीन घंटे तक हम लोग कुश्ती लड़ते थे । बाबा ने हम लोगों से इतना अधिक व्यायाम करवाया कि देश का अच्छे से अच्छा पहलवान भी इतना अधिक व्यायाम नहीं करता होगा । दिन भर तीस-चालीस हजार दण्ड बैठक करवाया करते थे, भारी पत्थर उठवाते थे और प्रतिदिन मान मन्दिर की सीढ़ियों पर पचास चक्कर दौड़वाया करते थे । बाबा महाराज स्वयं अपने हाथों से हम बालकों के शरीर में मालिश करते थे । मेरे शरीर पर बाबा ने बहुत दिनों तक मालिश की थी । हम लोगों के मन में भी यही भाव रहता था कि बाबा जो कुछ करवायेंगे, हम वही करेंगे । पण्डितजी बाबा महाराज के आदेश से हम लोगों के विरुद्ध लगाये गये मुकदमों के लिए कचहरी में केस लड़ते थे । वे हम लोगों की समस्याओं का निराकरण इस तरह किया करते थे । वे मथुरा में कचहरी में जाया करते थे । इसके बाद पण्डितजी की रुचि हम सभी को स्कूली शिक्षा प्राप्त कराने की हुई । उन्होंने बाबा महाराज से कहकर मुझे बोर्ड की शिक्षा में प्रवेश दिलाया । उस परीक्षा में मैं अंग्रेजी में अनुत्तीर्ण हो गया किन्तु श्रीबाबा महाराज के कहने पर पण्डितजी ने किसी प्रकार व्यवस्था की तो अगले वर्ष मैंने पुनः हाई स्कूल की परीक्षा दी और उत्तीर्ण हो गया, इसके बाद इन्टर की परीक्षा में सफलता प्राप्त की, बी. ए. की शिक्षा के लिए बाबा महाराज ने मुझको वृन्दावन भेजा किन्तु वहाँ मैं किसी कारणवश परीक्षा नहीं दे सका तो आगे चलकर बाबा महाराज ने मुझको प्राइवेट बी.ए, और बी. एड. की शिक्षा दिलवायी । बाबा के परिचित एक जयपुर के सज्जन थे, मैं जो नौकरी बाहर करता था, बाबा ने उनसे मेरे लिए बात की तो उन्होंने मेरा स्थानान्तरण (ट्रान्सफर) यहीं ब्रज में करा दिया । मेरी अध्यापन की नौकरी के समय ही ब्रज के पर्वतों की रक्षा के लिए खनन माफियाओं के विरुद्ध बाबा महाराज के द्वारा आन्दोलन चलाया जा रहा था । उस समय बाबा ने ब्रज की रक्षा के लिए बहुत से आन्दोलन एक साथ किये । सबसे पहले उन्होंने गह्वरवन की रक्षा की । उसके बाद ब्रज के कई गाँवों में स्थित सरोवरों का जीर्णोद्धार करवाया, लाखों वृक्ष लगवाये । ब्रज के पर्वतों की रक्षा के लिए संघर्ष तो बाबा ने पहले ही छेड़ दिया था किन्तु पर्वतों की रक्षा का व्यापक रूप से आन्दोलन सन् २००४ से प्रारम्भ हुआ ।

प्रश्न – जब बाबा महाराज पर्वतों की रक्षा के लिए स्वयं सखीगिरि पर्वत पर धरना देकर बैठे, उस समय कैसी परिस्थिति आयीं ?

भइयाजी – उस समय ऐसा लगता था कि कभी भी खनन माफियाओं द्वारा भेजे गये बदमाश जान से मारने के लिए आ सकते हैं । बहुत ही भय का वातावरण रहता था । कई बार रात भर गोलियाँ चलती थीं, चोरी-डकैतियाँ होती थीं । हमारे घर और पण्डित जी के घर रस मन्दिर में भी चोरी करने का प्रयास किया गया था । हमारे घर से चोर भैंसों को उठा ले गये थे, खूब गोलियाँ चलीं । ये सब खनन माफिया करवाया करते थे । यहाँ तक कि पहले खनन के पूर्व साधु-समाज भी बाबा महाराज से नाराज हो गया था क्योंकि तीनों गाँव (चिकसौली, मानपुर, बरसाना) विरोधी बन गये थे । इन विरोधियों ने बाबा महाराज के विरुद्ध दुष्प्रचार करने के लिए एक परचा छपवाया । सभी लोगों ने इसमें षड्यन्त्र किया था । उस पर्चे में जो लेख छापा गया – उसका मुख्य शीर्षक था – 'ब्रज में कालनेमि (रमेश राक्षस)' । इसमें प्रमुख रूप

से तो बाबामहाराज के बारे में ही बहुत-सी निन्दनीय बातें लिखी गयी थीं, साथ ही उनके विशेष अनुयायी हमारे और पण्डितजी के परिवार के बारे में भी दुष्प्रचार किया गया था । बाबा महाराज तो ऐसे निष्किंचन महापुरुष हैं कि इस घृणास्पद दुष्प्रचार से उनके विशाल हृदय पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा परन्तु हम लोगों की, विशेष रूप से हमारे पिताजी की बरसाना जाने की इच्छा नहीं होती थी क्योंकि अत्यधिक वीभत्स रूप में उस पर्चे के माध्यम से बाबा की निन्दा की गयी थी । जब बाबा ने देखा कि हम लोगों ने इस दुष्प्रचार के कारण बरसाना जाना छोड़ दिया है तो उन्होंने एक योजना बनायी । उन्होंने अपने सभी अनुयायियों को लेकर पूरे बरसाने में नगर संकीर्तन का आयोजन किया । नृत्य और गान युक्त संकीर्तन सहित बड़े ही धूमधाम के साथ बरसाने की परिक्रमा करते हुए प्रभात फेरी निकाली । पचास-साठ लोगों का मान मन्दिर में समूह था ही, ये सभी सदस्य बड़े ही उत्साह के साथ बरसाने के बाजार से नृत्य और गान करते हुए निकले । श्रीबाबा की कृपा से किसी के मन में तनिक भी भय अथवा संकोच नहीं था ।

प्रश्न – उस नगर संकीर्तन का क्या परिणाम हुआ ?

भइयाजी – इस नगर संकीर्तन का यह परिणाम हुआ कि जो बाबा और उनके अनुयायियों के विरुद्ध भीषण रूप से दुष्प्रचार किया गया था, उसका दुष्प्रभाव धीरे-धीरे कम होता गया और हम लोगों का बरसाना आवागमन प्रारम्भ हो गया ।

जब गह्वर वन के सिद्ध सन्त श्रीमौनी बाबा का गौलोक वास हुआ, उस समय श्रीबाबा महाराज ने गह्वर वन में श्रीमद्भागवत की सप्ताह कथा का वाचन किया किन्तु उस कथा का भी साधु समाज ने बहुत विरोध किया । उन्होंने ऐसा कुत्सित प्रयास किया ताकि इस कथा को सुनने के लिए कोई श्रोता आ ही न सके । उस समय विलासगढ़ पर बहुत अच्छे महात्मा श्रीवंशीदास बाबा रहा करते थे । उनकी बाबा महाराज के प्रति गहन श्रद्धा थी । साधु समाज के प्रबल विरोध के पश्चात् भी वे प्रतिदिन विलास गढ़ से गह्वर वन में बाबा को माला पहनाने आते और उनकी कथा भी सुनते थे । श्रीबाबा ने अत्यन्त ही रसमयी कथा कही ।

इस तरह की घटनाओं से पता चलता है कि समाज ने श्रीबाबा महाराज का और उनके अनुयायी हम दोनों परिवारों का बहुत ही क्रूरतापूर्वक विरोध किया । इन्हें कुचलने के लिए एड़ी से चोटी तक का जोर लगा दिया । मोर कुटी पर एक साधु रहता था । वह बाबा महाराज से इतना अधिक द्वेष करता था कि उनके विरोध में प्रायः जोर-जोर से अनर्गल प्रलाप करता रहता था । ऐसे कई साधु थे । बाबा के विरोधियों के पास यदि शक्ति होती तो ये थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाकर बाबा और हम सभी को दीर्घकाल तक जेल में बन्द करवा सकते थे । मोर कुटी का जो साधु बाबा के विरोध में प्रायः चिल्लाता रहता था । एक बार इतने जोर की आँधी आई कि वह मोर कुटी के ऊँचे पर्वत शिखर से लुढ़कता हुआ नीचे चिकसौली गाँव में आकर गिरा और उसकी वाणी ही बन्द हो गयी । वह बोलने में भी असमर्थ हो गया । विरोधियों ने उसको कागज़-कलम दिया और कहा कि इस कलम से लिख दे कि मुझे रमेश बाबा ने पहाड़ से नीचे गिरवाया है । इन लोगों ने बहुत प्रयास किया कि किसी प्रकार इस दुर्घटना के पीछे बाबा का हाथ होने के बारे में यह लिख दे परन्तु वह नहीं लिख सका और उसकी मृत्यु हो गयी । अन्त में विरोधियों ने दुष्प्रचार कर दिया कि रमेश बाबा के द्वारा इस साधु की हत्या करवाई गयी है । यहाँ तक कि गिरिराजजी की शिला पर हाथ रखकर विरोधियों ने सौगन्ध ली कि हम लोग रमेश बाबा को गह्वर वन से निष्कासित करके दम लेंगे । इसी लक्ष्य के साथ ही ये लोग बाबा के विरुद्ध हर तरह का कुत्सित प्रयास करते रहते थे । बाबा के विरोध में कई गाँवों की पंचायतें हुईं । चिकसौली में एक बार पंचायत हुई, उसमें पण्डितजी की माताजी परम पूज्या श्रीमती यमुना देवी को बुलाया गया और उन पर बाबा महाराज को त्याग देने का दबाव बनाया गया परन्तु उन्होंने किसी की बात नहीं मानी । लोगों ने उनके घर को पूरी तरह से मिटा देने का संकल्प कर लिया था । हमारा और पण्डितजी का परिवार तथा बाबा महाराज – ये तीन ही विरोधियों के शिकार के चरम लक्ष्य थे और उन लोगों

ने इनका दमन करने का भरपूर प्रयास किया परन्तु राधारानी की इन तीनों पर ही ऐसी कृपा थी कि कोई भी इनका एक बाल भी बाँका नहीं कर सका ।

प्रश्न – संक्षेप में अपने पिताजी के बारे में बताइए । उनका बाबा महाराज के प्रति समर्पण किस प्रकार का था ?

उत्तर – पिताजी का तो बाबा महाराज के प्रति पूर्ण समर्पण था । उन्होंने बचपन से मुझे बाबा महाराज को सौंप दिया था । मेरा विवाह भी नहीं किया । रिश्तेदारों ने मेरे विवाह का बहुत प्रयत्न किया किन्तु पिताजी ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया । उन्होंने कभी भी बाबा की किसी भी बात का विरोध नहीं किया । वे तो सदा बाबा के आदेश का पालन करने हेतु मरने-मिटने के लिए तैयार रहते थे । जिस समय ब्रज के पर्वतों का खनन अपनी चरम सीमा तक पहुँच गया था तो पिताजी ने बाबा से कहा कि क्या किया जाए ? ऐसा प्रतीत होता है कि अब खनन तो बन्द नहीं होगा । बाबा महाराज ने कहा – 'कोई बात नहीं, जैसी श्रीजी की इच्छा ।' जब वे मानपुर के प्रधान बने तो सबसे पहला कार्य उन्होंने यही किया कि बाबा महाराज का सबसे प्रिय कार्य गह्वर वन को संरक्षित करवाया । जबकि उनके प्रधान होने के पूर्व गह्वर वन के संरक्षण की कोई सम्भावना नहीं थी । बाबा महाराज ने ही उनसे कहा कि तुम गाँव प्रधान का चुनाव लड़ो । जब तुम मानपुर के प्रधान बनोगे तभी गह्वर वन के संरक्षण का प्रस्ताव पारित होगा । बिना प्रस्ताव के गह्वर वन आरक्षित नहीं हो सकता था । अतः गह्वर वन के संरक्षण की दृष्टि से ही बाबा महाराज ने मेरे पिताजी को ग्राम प्रधान का चुनाव लड़ने के लिए प्रेरित किया था । जब चुनाव हुआ तो पिताजी बड़ी आसानी से विजयी घोषित हुए ।

प्रश्न – जब गाँव में उनका प्रबल विरोध था फिर वे चुनाव में विजयी कैसे हुए ?

भइयाजी – मानपुर के आधे क्षेत्र के लोग अनुसूचित जाति से सम्बन्धित हैं, वे तो हम लोगों का विरोध नहीं करते थे परन्तु वे स्पष्ट रूप से खुलकर कुछ बोल नहीं सकते थे, फिर भी अपना मनपसन्द वोट देने से उनको कोई नहीं रोक सकता था । उन्होंने पिताजी के पक्ष में ही अपना वोट दिया । जब पिताजी विजयी होकर ग्राम प्रधान के पद पर नियुक्त हुए तो उन्होंने गह्वरवन के संरक्षण के सन्दर्भ में प्रस्ताव प्रस्तुत किया, प्रस्ताव पारित कर दिया । प्रस्ताव पारित होने पर भी गाँव के लोगों ने कहा कि हम गह्वरवन को वन विभाग में नहीं जाने देंगे । पहले गह्वर वन ग्राम समाज के अधीन था, उसको पिताजी ने प्रस्ताव पारित कराकर वन विभाग में स्थानान्तरित करवाया । गाँव के लोगों ने कहा कि हम गह्वर वन को वन विभाग में स्थानान्तरित नहीं होने देंगे । वरिष्ठ अधिकारीगण गाँव में आये, उस समय गाँव के लोगों ने एक लड़के को उठाकर फेंक दिया और कहा कि हम सब मर जायेंगे किन्तु गह्वर वन को वन विभाग में नहीं जाने देंगे । उस समय जिलाधिकारी ने रिपोर्ट लिख दी कि जनमानस के भारी विरोध के कारण गह्वर वन को वन विभाग में स्थानान्तरित नहीं किया जा सकता है । इस तरह मामला धीरे-धीरे अटक गया परन्तु इस सन्दर्भ में भारतीय संविधान की किसी धारा के अन्तर्गत राष्ट्रपति के द्वारा कार्रवाही हो चुकी थी और राष्ट्रपति के आदेश के बाद जिलाधिकारी का कोई अधिकार नहीं रह जाता । एक बार संयोगवश उन जिलाधिकारी महोदय की पण्डितजी से किसी स्थान पर भेंट हो गयी । पण्डितजी ने उनसे कहा कि आपने ऐसा आदेश कैसे पारित कर दिया ? राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल के आदेश के बाद तो जिलाधिकारी को उस आदेश को निरस्त करने का कोई अधिकार नहीं रह जाता है । पण्डितजी की न्यायसंगत बात को सुनकर जिलाधिकारी ने पुनः आदेश दिया कि चूँकि राज्यपाल का इस सम्बन्ध में आदेश पहले ही हो चुका है, इसलिए गह्वर वन को वन विभाग को सौंपा जाता है । अब यह आदेश कागजों पर लिखित रूप में दर्ज किया गया । जब पिताजी प्रधान बन गये तो उस समय हम लोग भी इस कार्य को क्रियान्वित करने हेतु सक्रिय हो गये । हमारी जनशक्ति में भी वृद्धि हो गयी थी, अतः हम लोगों ने जबरन गह्वर वन की सुरक्षा हेतु चहारदीवारी बनवायी, तार लगवाये, तब जाकर गह्वर वन सुरक्षित हुआ । इसके भी विरोध में गाँव के लोगों ने कुछ महात्माओं से मिलकर कोर्ट में मुकदमा दर्ज करवा दिया । बहुत दिनों तक मुकदमा चला, उसमें हम लोगों को विजय प्राप्त हुई । कहने का अभिप्राय है कि हर तरह से विरोधी पक्ष ने गह्वर वन पर अवैध रूप से कब्जा करने का प्रयास किया था परन्तु श्रीबाबा महाराज की संकल्प शक्ति के आगे इन

लोगों के कुत्सित अभियान धराशायी हो गये । उस समय बाबा का सत्संग इतना प्रभावशाली था कि उसके प्रभाव से गाँवों के कितने ही बालक बाबा के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो गये । जब उनके घर वालों ने उनका विरोध किया तो ऐसी स्थिति देखकर ये बालक स्वयं अपने घर वालों के विरोध में एकजुट हो गये । यहाँ तक कि पण्डितजी की भाभी श्रीमती कमलाजी का भी यही पक्ष था कि बाबा महाराज का सत्संग हमें प्राप्त हो, हम बाबा महाराज का लाभ उठायें । कमलाजी तो बाबा के प्रति अत्यधिक श्रद्धावान थीं, बाबा के कीर्तन में सम्मिलित होती थीं और बाबा के सत्संग के प्रभाव से भौतिक जीवनशैली से एक प्रकार से विरक्त-सी ही रहीं । जब वे बाबा के सत्संग में जाती थीं और उनके पतिदेव ने विरोध किया तो उन्होंने बाबा महाराज के सत्संग के समर्थन में अपने पतिदेव का भी एक प्रकार से त्याग कर दिया ।

प्रश्न – भइयाजी ! आप नौकरी कहाँ करते थे ?

भइयाजी – सबसे पहले सन् १९८० में जयपुर में मेरी सरकारी नौकरी लगी । एक वर्ष बाद फिर मेरा कामवन में ट्रान्सफर हो गया । यह बाबा की ही इच्छा थी । कामवन में लगभग बीस-बाईस वर्षों तक मैंने नौकरी की । कामवन के गाँव ढाना में मैंने लगभग १४ वर्षों तक नौकरी की । प्रतिदिन वहाँ से मान मन्दिर तक मैं आता-जाता था । उस समय बाबा महाराज गह्वर वन की अपनी कुटी में संध्याकालीन सत्संग में गीता का उपदेश दिया करते थे और रात्रि में ऊपर मान मन्दिर में नित्य का कीर्तन होता था । हालाँकि बाबा तो सत्संग में सभी शास्त्रों से प्रवचन करते थे किन्तु प्रारम्भ में गीता को सर्वोच्च प्राथमिकता थी । उस समय बाबा ने हम सभी को गीता कंठस्थ करवाई । मैं स्कूल में अध्यापन हेतु प्रातःकाल पैदल ही जाता था और वहाँ से पैदल ही लौटता था । मैंने गीता के सभी श्लोकों को कंठस्थ कर लिया था । अतः विद्यालय आते-जाते समय मैं सम्पूर्ण गीता का पाठ कर लेता था । एक वर्ष तक मैं उस विद्यालय पैदल ही गया । पैदल आते-जाते समय गीता का पाठ करते रहने से मुझे सम्पूर्ण गीता याद हो गयी थी । संध्या को मैं प्रतिदिन बाबा महाराज के सत्संग में सम्मिलित होता था । उस समय मान मन्दिर का निर्माण भी हुआ । बाबामहाराज की लगन ऐसी थी कि मानमन्दिर का निर्माण कार्य दुबारा हो । इसके लिए मैं स्कूल जाने से पहले टीम को तैयार करके, कार्य में लगाकर जाता था और एक बार दोपहर में आकर पुनः देखता था । संध्या को बाबा महाराज के सत्संग में और फिर रात्रि के कीर्तन में भी सम्मिलित होता था । चालीस लड़कों की टीम निर्माण कार्य करती थी । इसके साथ ही कुछ मजदूर भी मैंने लगा रखे थे । बहुत परिश्रम किया गया था । मन्दिर में पानी नहीं था तो नीचे से लोग मटकों में पानी भरकर मान मन्दिर लाते थे । पूरी बिल्डिंग बन रही थी और पीने के पानी की भी आवश्यकता होती थी तो पानी से भरे सैकड़ों घड़े प्रतिदिन ऊपर मन्दिर तक ले जाए जाते थे । इतना अधिक परिश्रम किया जाता था कि नीचे से सीमेंट से भरी बोरियाँ, बजरी की बोरियाँ सिर पर लादकर इतने ऊँचे मानगढ़ के शिखर पर ले जाई जाती थीं । इन कार्यों के लिए किसी वाहन का उपयोग नहीं किया जाता था । इसी प्रकार कितनी ही बार बाबा महाराज ने राधा सरोवर की सफाई करवाई । स्वयं बाबा सेवा करते थे । प्रत्येक कार्य में बाबा स्वयं आगे रहते थे, चाहे वनों के संरक्षण का कार्य हो चाहे ब्रज के तालाबों की खुदाई हो । राधा सरोवर की सफाई हर तीसरे-चौथे साल होती थी, इन सब कार्यों में बाबा स्वयं सहयोग करते थे । फावड़ा हाथ में लेकर कुण्ड के नीचे वे स्वयं खुदायी करते थे । बाबा महाराज बहुत अधिक परिश्रम करते थे । जब उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया था, वह भी मैंने देखा था । गाजीपुर संस्कृत विद्यालय में बाबा अध्ययन करने के लिए जाया करते थे । बाबा के पास लिखने के लिए कॉपियां-कलम नहीं थे, कोयले से मन्दिर की दीवारों पर वे संस्कृत के श्लोक और सारे सूत्र लिखा करते थे । मन्दिर की पूरी दीवारें बाबा के लेखों से रंगी पड़ी थीं । रात को वे सोते नहीं थे, नींद न आये, इसके लिए वे रस्सी से अपनी शिखा (चोटी) बाँध लेते थे । उस समय सखीशरण महाराज जी बाबा के लिए मधुकरी माँगकर लाते थे । वे गह्वर वन में बाबा की कुटी में रहते थे । बाबा ने उनसे कह दिया था कि मेरे लिए रोटी जल्दी मत लाना तो सखीशरणजी रात को ११ बजे उनके लिए रोटी लेकर ऊपर मान मन्दिर जाते थे । रात १२ बजे से पहले बाबा भोजन नहीं करते थे । संस्कृत व्याकरण की पुस्तकें पूरी रात भर बाबा पढ़ते रहते थे । अध्ययन के लिए बाबा ने अथक परिश्रम

किया । इसी प्रकार मान मन्दिर में स्थित प्राचीन गुफा में बाबा भजन करने के लिए बैठ जाते थे, उस गुफा के ऊपर एक दरवाजा था, उसमें भी वे एक कपड़ा ठूंस देते थे ताकि थोड़ा सा भी प्रकाश भीतर न आ सके । उसी गुफा में बैठकर पूरे दिन भर बाबा महाराज भजन किया करते थे । उस समय बाबा किसी से मिलते नहीं थे । यदि कोई उनसे मिलने के लिए आता तो मैं कह देता था कि अभी बाबा महाराज किसी से नहीं मिलेंगे । उस समय मैं छोटा बालक ही था । मैंने बाबा महाराज को बहुत भजन करते, तपस्या में रत होते देखा है । उस समय वे स्वयं गाँव से भिक्षा माँगकर लाते थे । बाबा ने बहुत वर्षों तक गाँवों में भिक्षा माँगी है । मानपुर और चिकसौली गाँवों में बाबा प्रतिदिन मधुकरी के लिए जाते थे । जब सखीशरण महाराज जी मान मन्दिर में आ गये तो उन्होंने बाबा से कहा कि अब आप भिक्षा माँगने मत जाइए, मैं ही आपके लिए भिक्षा माँगकर लाया करूँगा, उनकी बात को बाबा ने स्वीकार कर लिया और फिर सखीशरण महाराज ही बाबा के लिए मधुकरी माँगकर लाने लगे ।

प्रश्न – आपने बाबा की अपने गुरुदेव श्रीप्रियाशरणजी महाराज के साथ मुलाकात को देखा है ?

भइयाजी – हाँ, कई बार देखा है । बरसाना में एक धर्मशाला थी, जिसका नाम था 'बिनानी धर्मशाला' । वर्तमान में बरसाना की पीली कोठी के सामने यह धर्मशाला स्थित थी, अब यह अस्तित्त्व में नहीं है । जब भी श्रीप्रियाशरण बाबा महाराज बरसाना आते तो उसी धर्मशाला में वे रुका करते थे । बाबा महाराज कई बार मुझे भी उनका दर्शन कराने के लिए वहाँ ले गये थे । इस तरह बाबा के साथ मैंने भी कई बार उनका दर्शन किया था और जब वे गोवर्धन में निवास करते थे तो वहाँ भी मैंने बाबा के साथ उनका दर्शन किया था परन्तु जब गोवर्धन में बाबा के साथ उनका दर्शन करने मैं गया तो वे बाबा से थोड़ा सा नाराज से थे । उसका कारण यह था कि बाबा महाराज संस्कृत का अध्ययन करना चाहते थे और बड़े बाबा महाराज की इच्छा नहीं थी कि बाबा संस्कृत का अध्ययन करें, इस कारण से वे बाबा से अप्रसन्न से थे । जब मैं बाबा के साथ गोवर्धन में उनका दर्शन करने के लिए गया तो मुझे अधिक याद तो नहीं है परन्तु उन्होंने बाबा से पूछा कि तुमने संस्कृत में क्या अध्ययन किया है, राधासुधानिधि में तुमने क्या पढ़ा है, मुझे सुनाओ । उन्होंने बाबा को श्रीराधासुधानिधि के श्लोक ९७ – 'या वा राधयति.....' की व्याख्या करने को कहा । बाबा महाराज ने इस श्लोक की वैसी ही व्याख्या की जैसी कि बाबा प्रियाशरण महाराज के मनोनुकूल थी, इसे सुनकर वे बाबा महाराज से बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरन्त अपने गले से फूलों की माला उतारकर बाबा के गले में पहनायी । अब उनको यह अनुभव हो गया कि इन्होंने संस्कृत का अध्ययन करके बहुत अच्छा कार्य किया है । हड़ियावन में भी बाबा प्रियाशरणजी महाराज रहा करते थे । एक बार बाबा वहाँ भी उनका दर्शन करने गये थे तो मुझे भी साथ ले गये थे ।

प्रश्न – जो चालीस बालक मानमंदिर में बाबा के सानिध्य में रहते थे, कीर्तन करते थे, उनके बारे में श्रीप्रियाशरणबाबा महाराज की क्या प्रतिक्रिया थी ?

भइयाजी – बड़े बाबा को चालीस बालकों के समूह का मान मन्दिर में रहना पसंद नहीं था । इसका कारण यही था कि बाबा के विरोधी लोग प्रियाशरणजी महाराज के पास जाकर इन बालकों को लेकर बाबा की बहुत निन्दा किया करते थे । उन्होंने बड़े बाबा से कह दिया कि रमेश बाबा ने मान मन्दिर में ४० गुण्डे पाल रखे हैं । जबकि ये बालक अत्यन्त ही अनुशासित, सदाचारी एवं भक्त थे और बाबा महाराज का ध्येय यही था कि ये सभी बालक ब्रज के गाँवों में भगवन्नाम का प्रचार करें ।

आगे चलकर बाबा महाराज ने ब्रज के सभी गाँवों में प्रभात फेरियाँ आरम्भ करवायीं । १९८० के बाद से बाबा के द्वारा प्रभात फेरी कार्यक्रम का सूत्रपात किया गया । इसको उन्होंने केवल ब्रज तक ही सीमित नहीं रखा, अपितु ब्रज के बाहर के गाँवों में भी इसका विस्तार कर दिया और अब तो उनकी प्रेरणा से भारत के चालीस हजार गाँवों में प्रभात फेरियों के माध्यम से नाम संकीर्तन का व्यापक प्रचार-प्रसार हो गया है । नाम संकीर्तन के दूर-दूर तक प्रचार के लिए बाबा महाराज ने हजारों गाँवों में निःशुल्क ढोलक और माइकों का वितरण भी करवाया । प्रभात फेरी के प्रचार हेतु मैं

भी गाँवों में गया हूँ । अपने ही माइक से हम लोग पहले कीर्तन करते थे, उसको सुनकर गाँव के लोग एकत्रित हो जाते थे और तब उनको सत्संग के माध्यम से नाम कीर्तन की महिमा का बोध कराया जाता था । इस प्रचार कार्यक्रम में बाबा के कठोर निर्देशानुसार कहीं से पैसा लेना तो दूर हम लोग स्वयं के वाहन से दूर-दूर तक प्रचार के लिए जाते थे और वाहन के डीजल का व्यय भी स्वयं करते थे । किसी से डीजल के पैसे तक के लिए याचना नहीं की जाती थी । इस प्रकार बाबा ने हम लोगों से बहुत ही संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करवाकर भगवन्नाम के प्रचार-प्रसार में हम सबको नियुक्त करवाया ।

प्रश्न – मान मन्दिर में पहले बिजली-पानी का प्रबन्ध नहीं था । स्वयं श्रीबाबा भी इसके विरुद्ध थे, फिर इनका प्रबन्ध कैसे किया गया ?

भइयाजी – सन् १९८८ तक मान मन्दिर में बिजली की सुविधा नहीं थी । इसी वर्ष मान मन्दिर से पहली बार ब्रज चौरासी कोस की ४० दिवसीय निःशुल्क परिक्रमा का शुभारम्भ हुआ था । मेरे पिताजी गाँव के प्रधान थे । उस समय बाबा महाराज ४० दिनों के लिए ब्रजयात्रा के साथ गये हुए थे । श्रीबाबा महाराज नहीं चाहते थे कि बिजली तथा उससे सम्बन्धित आधुनिक सुख-सुविधा मान मन्दिर में फैले । उन दिनों मोबाइल फोन का तो प्रचलन ही नहीं था । मैंने स्वयं कभी बिजली के प्रकाश में अध्ययन नहीं किया, मिट्टी के तेल का दीपक जलाकर ही सारी स्कूली शिक्षा का अध्ययन किया । मेरे एम. ए. तक के शिक्षा काल में गाँव में बिजली का कोई प्रबन्ध नहीं था । १९८८ में मन्त्री जी से कहकर मैंने मानपुर गाँव में और मान मन्दिर में बिजली का प्रबन्ध करवाया । मान मन्दिर में बिजली के लिए खम्बे लगवाये गये और जब तक ब्रजयात्रा चालीस दिन के बाद वापस लौटकर आई, तब तक मान मन्दिर में बिजली का प्रबन्ध हो गया था । पहले मान मन्दिर पर पत्थर की पुरानी सीढ़ियाँ थीं । १९९० के आसपास नई सीढ़ियों का निर्माण करवाया गया ।

क्र.	दिनांक	दिन	तिथि	पड़ाव	दर्शनीय स्थल	कि.मी.
1	05.10.2025	रविवार	त्रयोदशी	बरसाना	संकल्प प्रातः – यात्रा पंडाल में, मानगढ़, कुशलबिहारी मन्दिर, श्रीजी मन्दिर, दानगढ़, मोरकुटी, साँकरीखोर, विलासगढ़, माहेश्वरीसर, बिहारी जी मन्दिर, दोहनी कुण्ड, श्रीमाताजी गौशाला, पड़ाव	6
2	06.10.2025	सोमवार	चतुर्दशी	बरसाना	ब्याहुला, देह कुण्ड, ललिता अटारी, ऊँचागाँव, दाऊजी दर्शन, सोनोखर, भानोखर, ब्रजेश्वर महादेव, रावड़वन, पाडरवन, चित्रासखी, चिकसौली, मानपुर, पड़ाव	13
3	07.10.2025	मंगलवार	शरद पूर्णिमा / प्रतिपदा	नन्दगाँव	पीली पोखर (प्रियाकुण्ड) 2 km, गुलाबसखी समाधि 0.5 km, लक्ष्मीनारायण मन्दिर 1 km, प्रेमसरोवर 0.5 km, विह्वल कुण्ड, संकेत देवी, बैठक जी, श्यामकुण्ड, राधारमण जी दर्शन 2 km, दोमिलवन 1.5 km, पूर्णमासी, उद्धव क्यारी 1 km, हाउ–बिलाऊ 2 km, पड़ाव 3 km	13.5
4	08.10.2025	बुधवार	द्वितीया	नन्दगाँव	परिक्रमा व दर्शन, पावन सरोवर, मोती कुण्ड, मयूर कुण्ड, आशेश्वर महादेव, टेर कदम्ब, कृष्ण कुण्ड, ललिता कुण्ड, यशोदा कुण्ड, नन्द खिरक, चरण पहाड़ी, पनिहारी कुण्ड, वृन्दा कुण्ड, पड़ाव	11
5	09.10.2025	गुरुवार	तृतीया	सतवास	वृन्दा देवी 1.5 km, लौहरवारी 2.5 km, भड़ोखर 2.5 km, मेहराना 2.5 km, कनबाड़ी 3 km, सतवास 3 km, पड़ाव	15
6	10.10.2025	शुक्रवार	चतुर्थी / करवाचौथ	घड़ी	ऐंचवाड़ा 2 km, पथवारी 2 km, किरावता 2 km, नोनेहरा 2 km, घड़ी 4.5 km, पड़ाव	12.5
7	11.10.2025	शनिवार	पंचमी	आली ब्राह्मण	बिछोर 5 km, इन्धाना 4 km, अंधोप 3 km, आली ब्राह्मण 2 km, पड़ाव	14
8	12.10.2025	रविवार	षष्ठी	बनचारी	नागल जाट 2 km, सौंध 3 km, सौंध गाँव 3 km, बनचारी 3 km, पड़ाव 1 km	12
9	13.10.2025	सोमवार	सप्तमी / अहोई अष्टमी व्रत	लीखी	डकौरा 1 km, महरौली 1.5 km, खाम्बी 4 km, लीखी 4 km, पड़ाव 1 km	11.5
10	14.10.2025	मंगलवार	अष्टमी	यमुनाजी	हसनपुर 4 km, महौली 3 km, यमुनाजी 4 km, पड़ाव	11
11	15.10.2025	बुधवार	नवमी	जैदपुरा	मारव 4 km, जैदपुरा 6 km, पड़ाव	10
12	16.10.2025	गुरुवार	दशमी	बाजना	मानागढ़ी 1 km, बाघई 5.5 km, भूतगढ़ी 0.5 km, बाजना 3 km, पड़ाव	10
13	17.10.2025	शुक्रवार	रमा एकादशी	पिथौरा	पारसौली 2 km, सलाका 2.5 km, बरौठ 2 km, पिथौरा 5 km, पड़ाव	11.5
14	18.10.2025	शनिवार	द्वादशी / धनतेरस	टैंटीगाँव	मीरपुर 2 km, सुल्तानपुर 2.5 km, सप्तर्षि 1.5 km, सुरीर 0.5 km, टैंटीगाँव 5 km, नगला भूपसिंह 1.5 km, पड़ाव	13
15	19.10.2025	रविवार	त्रयोदशी	माँट	रामनगर 1 km, बिजौली 1.5 km, छारी 2 km, वंशीवट 1 km, भाण्डीरवन 1 km, माँट 4 km, पड़ाव	10.5
16	20.10.2025	सोमवार	चतुर्दशी	वृन्दावन	बेगमपुर 5 km, जहाँगीरपुर 2 km, बेलवन 1 km, वृन्दावन, पड़ाव 4 km	12
17	21.10.2025	मंगलवार	अमावस्या / दीपावली	वृन्दावन	परिक्रमा	14
18	22.10.2025	बुधवार	प्रतिपदा / अन्नकूट / गोवर्धन पूजा	वृन्दावन	दर्शन	10

19	23.10.2025	गुरुवार	यम द्वितीया/भाई दूज	जावरा	पानीगाँव 4 km, राधारानी मानसरोवर 3 km, आसा ही घड़ी 5 km, जावरा 2 km, पड़ाव	14
20	24.10.2025	शुक्रवार	तृतीया	धरनीधर	जैसवा 2.5 km, बकला 2 km, नीमगाँव 3.5 km, शेरनी 2.5 km, दाऊजी प्राचीन मन्दिर, किला 3.5 km, बेसवाँ 1 km, धरनीधर 1 km, पड़ाव	16
21	25.10.2025	शनिवार	चतुर्थी	सौनई	नयावास 1.5 km, काला आम 1.5 km, घड़ी पिथौर 1.5 km, भगु 0.6 km, चुहैरा 1.5 km, सौनई 3 km, पड़ाव 2 km	11.6
22	26.10.2025	रविवार	पंचमी	सौंखखेड़ा	गुड़ेरा 4.5 km, नगौड़ा 2 km, गुर्ज 1.5 km, अर्जुनिया 1.5 km, सौंखखेड़ा 1.5 km, पड़ाव	11
23	27.10.2025	सोमवार	सूर्य षष्ठी	दाऊजी	पचावर 3 km, अवैरनी 4.5 km, दाऊजी मन्दिर 2.5 km, पड़ाव 2 km	12
24	28.10.2025	मंगलवार	षष्ठी	चिन्ताहरण	खंडौरा 3 km, बसई 2.5 km, हरदसा 1 km, ऋणमोचन 2 km, चिन्ताहरण 2.5 km, पड़ाव	11
25	29.10.2025	बुधवार	सप्तमी	रावल	ब्रह्माण्ड घाट 0.5 km, महावन चौरासी खंभा 1.5 km, रमणरेती 2 km, रसखान समाधि 0.5 km, गोप तलैया 0.5 km, गोकुल 1 km, चन्द्रावली 3.5 km, रावल 2 km, पड़ाव	11.5
26	30.10.2025	गुरुवार	गोपाष्टमी	बाद	गोकुल बैराज 5 km, बाद, राधारानी हिताश्रम 5 km, पड़ाव	10
27	31.10.2025	शुक्रवार	अक्षय नवमी	मनसादेवी	भैंसा 2 km, छरगाँव 1 km, शेरसा 2.5 km, माल (मार्कंडेय वन व ऋषि मन्दिर) 3.5 km, सोनोठ 1.5 km, मनसा देवी मन्दिर पड़ाव 1 km	11.5
28	01.11.2025	शनिवार	दशमी	सौंख	गोपालपुर 0.5 km, जाजमपट्टी 1.5 km, मगौरा 1 km, फौडर 1.5 km, लोरिहा पट्टी 5 km, सौंख, पड़ाव 1.5 km	11
29	02.11.2025	रविवार	देवोत्थान एकादशी/तुलसी विवाह	पूँछरी	सौंख बाजार 1 km, बछगाँव 3.5 km, कौंथरा 7 km, पूँछरी पड़ाव 2 km	13.5
30	03.11.2025	सोमवार	त्रयोदशी/प्रदोष व्रत	पूँछरी	गोवर्धन परिक्रमा	21
31	04.11.2025	मंगलवार	वैकुण्ठ चतुर्दशी	ऊमरा	श्यामढाक 3 km, सामई 3 km, ऊमरा 3 km	9
32	05.11.2025	बुधवार	पूर्णिमा/चातुर्मास समाप्त	टाँकौली	नगला फौजदार 1.5 km, नगला चाहर 1 km, डीग 5.5 km, लक्ष्मण जी मन्दिर, राधानगरी (महमदपुर) 5.5 km, पड़ाव 1.5 km	15
33	06.11.2025	गुरुवार	प्रतिपदा	खोह	गुहाना 2 km, बूढ़ेबद्री 2 km, जड़खोर 2.5 km, पहलवाड़ा 1.5 km, खोह 3.5 km, पड़ाव	11.5
34	07.11.2025	शुक्रवार	द्वितीया	आदिबद्री	नील घाटी, कदम्बखण्डी, अलीपुर, हिरनखोई, देव सरोवर, गंगोत्री, यमुनोत्री, हरिद्वार, हर की पौड़ी, आदिबद्री	8
35	08.11.2025	शनिवार	तृतीया/चतुर्थी	केदारनाथ	अलीपुर 1 km, पसोपा 3 km, धाऊ–बरौली 2.5 km, केदारनाथ 4 km	10.5
36	09.11.2025	रविवार	पंचमी	कामां	लैहसर 5 km, चरण पहाड़ी 3 km, लुक–लुक कुण्ड 2 km, गया कुण्ड 1.5 km, पड़ाव 1.5 km	13
37	10.11.2025	सोमवार	षष्ठी	कामां	परिक्रमा व दर्शन – सेतुबंध, रामेश्वर, लंका, चौरासी खंभा, वृन्दा देवी, गोविन्द जी, श्री कुण्ड, खिसलनी शिला, गुफा, भोजन थाली, मदनमोहनजी, गोकुल चंद्रमा	10
38	11.11.2025	मंगलवार	सप्तमी	बरसाना	कनवाड़ा 2.5 km, कदम्बखण्डी 2.5 km, सुनहरा 2.5 km, बरसाना 4 km, मानमन्दिर 3 km	14.5

1. यात्रियों को दोनों समय भोजन, प्रातःकाल चाय औषधियाँ एवं आवास व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क है। 2. वाहन द्वारा यात्रा करने वाले एवं निजी टैण्ट की सुविधा वालों को शुल्क देय है। 3. यात्रा में ठाकुरजी के डोले के पीछे ही चलना होगा, आगे जाना निषेध है। 4. यात्रा पण्डाल में धूम्रपान आदि करना निषेध है। बिस्तर, जमीन की सीलन को रोकने के लिए मोमजामा, टॉर्च एवं जाड़े के कपड़े भी लाएँ। 5. यात्रियों को अपने साथ थाली, लोटा, बाल्टी, कटोरी, गिलास आदि लाना आवश्यक है। **6. परिस्थितिवश कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।** 7. यात्राकाल में मौन रहें अथवा कीर्तन करें यही यात्रा का शुल्क है। 8. वृद्ध यात्री अपने साथ एक सहायक अवश्य लाएँ। 9. यात्रा में दान देने के इच्छुक यात्री किसी व्यक्ति को न देकर यात्रा कार्यालय में देकर रसीद प्राप्त करें अथवा गोलक में डालें। **10. प्रत्येक यात्री अपने साथ आधार कार्ड/पहचान पत्र की फोटोकॉपी अवश्य लाएँ।**

– विशेष सूचना –

धाम सेवा के बिना यात्रा, यात्रा ही नहीं है। जो धाम सेवक है, वही सच्चा यात्री है। यमुना जी को फिर से धाम में लाना है, ये सच्ची धाम सेवा है। इसके लिए सभी यात्री यमुनाजी को धाम में लाने का संकल्प व प्रयत्न अवश्य करें।

श्री माताजी गौशाला सेवार्थ

श्री रामकथा

महामहोत्सव

श्रीधाम बरसाना

शनिवार 20/09/2025 से रविवार 28/09/2025

संध्या कार्यक्रम की सूची

सम्पूर्ण मनोरथी :

VEENA DEVELOPERS

Your Dreams... Are Our Homes...

ANDHERI - MUMBAI

प्रथम दिवस

शनिवार, 20 सितंबर 2025
श्री राम कथा शाम 4.00 से शाम 7.00 बजे तक,
महाप्रसाद 7.00 बजे से

द्वितीय दिवस

रविवार, 21 सितंबर 2025
महारास कथा स्थल पर परम पूज्य श्री रमेशबाबा महाराज जी के सानिध्य में
शाम 5.30 से 7.00 बजे तक - महाप्रसाद 7.30 बजे से

तृतीय दिवस

सोमवार, 22 सितंबर 2025
श्रीजी मंदिर (श्रीराधा मंदिर-भानगढ़) में छप्पन भोग,
दर्शन समय शाम 5.30 से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

चतुर्थ दिवस

मंगलवार, 23 सितंबर 2025
ब्रज की प्रसिद्ध रासलीला एवं फूलों की होली
शाम 5.00 बजे से 7.00 बजे तक, महाप्रसाद 7.30 बजे से

पंचम दिवस

बुधवार, 24 सितंबर 2025
श्री गिरिराजजी छप्पन भोग, सुरभि कुंड, जतीपुरा
दर्शन शाम 5.30 बजे से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

षष्ठ दिवस

गुरुवार, 25 सितंबर 2025
भजन संध्या, श्री हेमंत बृजवासी एवं सुश्री मैथिली ठाकुर के संग
शाम 5.00 बजे से 7.00 बजे तक, महाप्रसाद 7.30 बजे से

सप्तम दिवस

शुक्रवार, 26 सितंबर 2025
श्री यमुनाजी छप्पन भोग , विश्राम घाट - मथुरा
शाम 5.30 बजे से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

अष्टम दिवस

शनिवार, 27 सितंबर 2025
कुसुम सरोवर (गोवर्धन) दीपदान दर्शन, हवेली संगीत अमी नीरज परीख,
मातंग परीख, सृष्टि त्रिपाठी ग्रुप के संग (अहमदाबाद वाले)
शाम 5.30 बजे से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

नवम दिवस

रविवार, 28 सितंबर 2025
श्री राम कथा विराम

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा 'गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश' से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित,AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26